# प्रहरी का आत्म मंथन

## (78 हिन्दी पदध्य रचनाओं का संकलन )

**मेज़र जनरल जे. के. एस. परिहार (सेवा निवृत) द्वारा रचित**

# 1.राष्ट्र महानायक परम श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी को सादर समर्पित

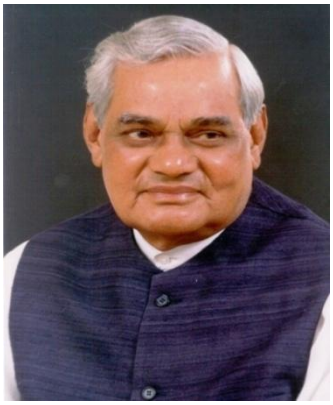

## कृष्णा - कृष्ण नन्दन अटल बिहारी

कृष्णा एवं कृष्ण के कण ,अमूल्य रत्न अटल,
पूर्णिमा की चाँदनी,ऊषा की किरण,मधुरप्रभात ,
दोपहर की धूप में निश्चल ,सहृदय,विशाल वट वृक्ष अटल,
संध्या की लालिमा में अनंत जड़ित अटल,
प्रजातंत्र के चतुर्थ स्तम्भ अटल , प्रजातंत्र के पृथम एवं अटल प्रहरी अटल.
पचहत्तर की कालरात्रि के दंभ ,अहंकार को क्षत विक्षत कर,
प्रजातंत्र के सूर्योदय के प्रथम ,प्रखर एवं अटल योद्धा अटल.
नरसिंह के सारथी अटल ,प्रियदर्शिनी के प्रिय अटल ,जवाहर के जवाहर अटल ,
लाल बहादुर के बहादुर अटल,बलराज के बल अटल,दीन दयाल के प्रिय अटल,
जन - जनसंघ के सारथी अटल,कमल जननी ,कमल पोषक अटल.
नरेंद्र के अटल मार्ग दर्शक अटल ,राज धर्म ,राजनीति,कर्मनीति, साहित्यनीति ,
धर्म सहिष्णु ,शत्रु,प्रतिपक्ष को सहृदयपाश मेँ जड़ित करने में सक्षम,शत्रु अजात अटल.
पोखरण से उदित और थल ,जल , नभ में गुंजित टंकार ,
तदापि साथ में द्रढ़ , सहृदय,निश्चल बुद्ध मुस्कान.
कारगिल पर प्रहार पर अटलप्रहार अटल,
पार्थ भी तुम,अर्जुन भी तुम, युधिष्ठिर भी तुम ,भीष्म भी तुम.
अद्भुत एवं अटल संयोग ,अटल और कृष्ण ,
कृष्णा एवं कृष्ण बिहारी नन्दन एवं लालकृष्ण के अजर-अमर सारथी.
भारत माँ के श्याम -सलोने ,अजर-अमर “अटल” तुम्हें शत - शत प्रणाम,
जितेन्द्र परिहार
16 अगस्त 2018 ,रात्रि 9 बजे

# 2.राष्ट्र निष्ठा एवं निर्माण के संकल्प के प्रति समर्पित

## अभिनंदन - अभिनंदन,

अभिनंदन , अभिनंदन, हे राष्ट्र प्रहरी  अभिनंदन,
नभ, थल जल सर्वत्र भीषण प्रहार के प्रति सादर अभिनंदन,
वर्ण, सवर्ण, धर्म, विधर्म की सख्त बेड़ियों से विमुक्त, परिभाषा को अभिनंदन,
राज विरासत की मिथ्या के पूर्ण समापन को अभिनंदन,
सिफर से शिखर के अद्भुत समन्वय को अभिनंदन,

गंगा से कावेरी और ताप्ती से तीस्ता के समागम  को अभिनंदन,
मेघा रथ पूरबी के थार की कण कण बालू से समन्वय को अभिनंदन ,

अपितु,हे, राष्ट्र प्रहरी,
पूर्वाग्रह, अनुग्रह, अनुराग, विराग, स्मृति, विस्मृति, दुख सुख को तज,
राष्ट्र निर्माण, युवा आकांक्षाओं, शिक्षा, व्यापार,विद्युत, जर्जर और
अश्रु पीड़ित कृषि और ग्रामीण व्यवस्था के उद्धार के प्रण प्राण बनो,

अभिनंदन, अभिनंदन, और अभिनंदन

जितेंद्र परिहार
26 मई 2019,अपराह्न 3.25

# 3.परम आदरणीय माँ और पिताजी को सादर समर्पित

## "नंदी सेवक केशव"

बालू के खेतों में जन्मे पले केशव,

मासूम बालक ने सहा मातृ बिछोह जाने अनजाने में बड़ी बहना ने थामी अंगुली , चले नन्हे कदम मामा के घर बड़े हुए कुछ और ये कदम , युवा होते बालक को मिला बिना सहारे जीवन के झंजावत में खुद वैतरणी तरने का दशरथी फरमान. ना कुछ बोला ,ना कुछ सोचा, ना हुई उफ़ , चलदिए केशव अजनबी डगर, अनजान पहाड़ों पर अनजान राहों पर, अनजान किनारों पर तपती धूप , शिशिर की ठिठुरती बर्फीली काली रातें सब कुछ देखा सहा १८ बरस के पहले ही , उर्मिल ने पकड़ी डोर रघुवीर बने सारथी , उठे कदम धीरे धीरे , कटिली राहों पर अडिग , सजग ,निश्चल , सहृदय नंदी सेवक कब चिर विश्राम में गए ,बिना कुछ कहे सब कुछ सहे, एक जून की रोटी खुद और पकवान सबके लिए , त्याग की अमिट ,अटूट , दृनिश्चय, जहां क्या अपने ही ना समझ पाए उन्हें ,जीवन भर कण कण ऋणी है इस ऋषि का , आज जब उनके ऋणी यह हकीकत समझे तो वोह हाथ ही कहां जिसने यह मुकाम दिया ,वोह हिम्मत के दो बोल कहां जिसने आग का दरिया भी राख किया , आज वोह प्यार भरी आंखे कहां जिसने सिर्फ सिर्फ सबको प्यार लुटाया , मुझे तो इस लायक भी नहीं छोड़ा की दो शब्द उनसे बयां कर सकूं , ना केशव ना उर्मिल , बस दो पल का अहसास जिन्दगी की हर सांस तक ऋणी है.

केशव वाणी ,मैं आज भी हूं तुम्हारी आंखों में ,मैं आज भी हूं तुम्हारे सपनों में , मैं आज भी हूं तुम्हारे कार्यों में,जो भी मुझे मिला वोह मेरे कर्म थे ,जो विरासत जमीन पर है ,नियामत है

जितेन्द्र परिहार

17 अक्टूबर 2019,रात्रि 22 43 बजे

# 4.कोरोना महामारी एवं राष्ट्रीय भागीदारी के प्रति समर्पित

## अपना साथ ,सबका साथ ,अपना बचाव सबका बचाव

महा विश्व में है यह भीषण महामारी ,आन पड़ी सब पर ये महा जिम्मेदारी ,बन्द करो बेफिजूल खरीदारी,बन्द करो बेमतलब सवारी और होटलों में आवाजाही. बारादरी में ना हो महफ़िल ,दोस्तों को दो बेहिसाब बेपनाह जगह दिलों में, क्यों करो उन्हें बेवजह जरदारी.

इन दिनों घर में रहो , करो खातिरदारी घरवालों की और बनो साथ में भागीदार राष्ट्र प्रहरी विरूद्ध इस मोहक भीषण महामारी के.

अपना तन , परिवार ,समाज ,राष्ट्र और धरा को बचाने की तुम पर है यह अनन्य एवं अति विषम जिम्मेदारी.

कोरोना ना देखे राजनीति के हाथ , कमल ,झाड़ू ,हाथी और बाकी निशान ,ना यह देखे धर्म ,कर्म ,भाषा, समुंदर , आसमान और मुल्कों की दीवारें,ना देखे नृप और फकीर का फर्क , फिर क्यों हो तुम खुद से भी अनजान ,संभलों और भगाओ दूर इस संकट को . लॉक डाउन है आज़ और कल की जीवन धारा बस निभाओ थोड़ी सी यह अपनी जिम्मेदारी .

बेशक कर्म और मन से अपनों और परायों से जुड़े रहो , बेशक उनके दिल में रहो , साथ रहो सबके पर तन से हो अष्ट कदम की दूरी.

अपना साथ ,सबका साथ ,अपना बचाव सबका बचाव
यही मंत्र तंत्र है कोरोना से मुक्ति का.

जितेंद्र परिहार
22 मार्च 2020 ,दोपहर 2.20 बजे

++++++++++++++++++++++++++++++

# 5.कोरोना महामारी एवं  म.प्र. की उथल पुथल पर सटीक एवं त्वरित टिप्पणी

## कोरोना का महाभारत ,उठा धनुष करो प्रहार

देश की धड़कन ,मालव की शाम और शान
है  बेबस और बेचार , सर्वत्र है कॉरोना का हाहाकार .
बिलख रही है स्वच्छता की रानी, अहिल्या नगरी ,
महाकाल के द्वार पर भी है तांडव की ललकार,
बुधनी से कुछ कोस दूर ताल तल्लय्या में भी है  भंवर की फुफकार.

राज सिंहासन और सभा में है दू:शासन और दुर्योधन का साया ,
संकट के इस झंझावात में ,हे ,राजधीश  , शिव ध्वज वाहक तुम
कैसे अकेले इन तीरों से यह चक्रव्यूह तोड़ोगे , आदित्य ज्योत से मेघा तड़ित को  कैसे रोकोगे,
कमल रथ पर  तो हो गए सवार  ,पर  थोड़ी तो सुध  लो अपनी  ,कुछ सुध लो उन वीरों की भी जो  कोरोना के इस महाभारत में भीष्म शैय्या  पर लेटे लेटे ,घनी अमावस्या में  जोट रहे हैं बांट प्रभात की ,

कहां है तुम्हारी सेना और  महा धनुर्धर  ,है धनुर्धारी  उठा धनुष  ,चढा  प्रत्यंचा ,कर कैलाश पति और गोपाल कृष्ण को नमन  ,कर चूर चूर यह चक्रव्यूह नियति  का,
अथवा  नर  नृपेश  भी इस महाभारत में  अनिरुद्ध  को नहीं बचा  पाएंगे .

संजय दृष्टिगत इस कॉरॉना महाभारत में बेबस है , बेचार है यह भारत का दिल ,
कुछ इन धड़कनों की भी सुनो कुछ अपनी धड़कनों की भी सुनो ,
क्यों हो मुग्ध अपनी छबि पर , तज तो यह दर्प और मुस्कान, कर धारण लौह मुकुट,उठा धनुष,
बस करो प्रहार, बस करो प्रहार.

जितेन्द्र परिहार
१५ अप्रैल २० रात्रि १० बजे

# 6.पर्यावरण एवं जल शक्ति संसाधन संचय के उद्देश्य के प्रति समर्पित जल शक्ति संचय की अलख जगाएं

सबरी के चखे दो बेर, श्री राम का महाभोज अनमोल.

सुदामा के मुठ्ठी भर सूखे चावल, श्री कृष्ण का महा भोज अनमोल. ब्राह्मण के दो जून, मठाधीश का महा भोज अनमोल. अनुयव के दो मीठे बोल, अमृत सागर से अधिक अनमोल.कृषक की दो गेहूं बाली, जीवन धन संचय से अधिक अनमोल.

दया, हया, परोपकार और मृदु भाव, धरा, पाताल और नभ से ज्यादा अनमोल.
श्रमिक की पेशानी पर उभरी पसीने की दो बूंदे, वणिक के अथाह स्वर्ण भंडार से ज्यादा अनमोल.
सच्चे बोल, सच्चे कर्म, सच्चा धर्म, आकाश गंगा से ज्यादा अनमोल.

मानव जीवन सौ योनि से ज्यादा अनमोल.
गौ शाला को दान और स्वान को रोटी के दो टुकड़े, रत्न दान से ज्यादा अनमोल.
ज्ञान संचय, पितृ मातृ और राष्ट्र सेवा सब धर्मों से अधिक अनमोल.

जल, वायु, प्रकृति और संसाधन संचय सर्वोत्तम एवं अति अनमोल.
आओ इस भारत भूमि पर जल शक्ति संचय की भागीरथी अलख जगाएं. जल ही जीवन है, जल की एक एक बूंद के संचय से हर घर, हर गाँव,हर शहर और प्रांत में निर्मल जीवन जल की सतत गंगा बहाएं, भारत भूमि पर जल संचय शक्ति को दृढ़ निश्चय और राष्ट्र धर्म बनाएं.

जितेंद्र परिहार
02 जुलाई 2019,रात्रि 11.45 बजे.

# 7.विश्व पर्यावरण दिवस (05 जून )पर समर्पित

## " मैं प्रकृति हूँ ,जग जननी हूँ,जग धरणी हूँ "

मैं प्रकृति हूँ ,जग जननी हूँ,जग धरणी हूँ ,जग पालनहार हूँ .
सतयुग ,त्रेता ,द्वापर से कलयुग तक ,इस धरा ,संस्कृति को पोषा है ,
पाला है, अपने आँचल में, सागरमाथा से एंडीज़ और ऑकलैंड तक.
गंगोत्री के निर्मल जल के आचमन से ,
नील ,अमेजान और टेम्स की कलकल ,
सबमें तुझे समेटा है,जीवन बीज़ को सींचा है ,
पर हे मानव ,आज तेरी माँ का आँचल तार - तार है ,
हृदय रुदल है ,जठरा में दावानल है ,धरा कंपन है ,
सृष्टि का ,वनवासी प्राणियों और अपनी जीवन दायीनि का संहार न कर ,
शुभ्र - स्वछंद वायु को दूषित न कर ,
जीवन धारा के श्रंगार ,पर्वतमाला रूपी मंगलसूत्र और मेघ मल्हार पर प्रहार न कर, दूषित प्रदूषण से ऊर्जा पुंज को विषाद न दे ,वनस्थली ,वनस्पति और अमृतजल को समुन्द्र मंथन के विष में न बदल,तात मैं नीलकण्ठ नहीं हूँ,
अपनी जीवन जननी ,जीवन धरणी ,
पालनहार प्रकृति के आँचल को तार तार न कर ,
माँ के आँचल को क्षत - विक्षित न कर.

जितेंद्र परिहार ,
05 जून 2016 ,2335 बजे

# 8.योग दिवस :21 जून 2019
# "जीवन रस का अमृत , यह योग है "

शरीर को आत्मा में लीन करने की कला,
कुंडली के चक्र में ऊर्जा प्रवाहित करने की कला,
शिष्य को गुरु से युग्म करने की कला,
पतंजली ऋषि के हठ योग को
तांत्रिक से तार्किक करने की कला,
युद्ध क्षेत्र में योगी कृष्ण के अर्जुन को गीता ज्ञान
के दान की कला,
श्री राम के जीवन और रण भूमि में , अत्यंत विषम क्षणों में
संयम, धैर्य, मर्यादा और शक्ति के युग्म को आत्मसात करने की कला,
वैदिक पुराण, उपनिषद, स्मृति को भारत जीवन शैली से युग्म होने की कला , यह योग कला,
सर्व धर्म सम्मत, सर्व राष्ट्र सम्मत,
जीवन, संयम, शक्ति को पाताल से आसमान तक जोड़ने की
यह योग कला,
यह योग है, यह योग है.

जितेन्द्र परिहार
19 जून 2019,11.40 प्रातः

# 9.भारतीय सेना के प्रति समर्पित

## रणभेरी की गूंज पर तुम बढ़े चलो,बढ़े चलो, तुम बड़े चलो.

रणभेरी की गूंज पर , आफत को ललकार कर,
धरा के कंपन पर,
अंधकार को चीर कर,
बर्फ को रौंद कर, मरुस्थल को नाप कर,
घने जंगल को कूद कर, कर परिजन, मोहमाया का तज , कर स्वयं का तर्पण ,
कर भारत माँ को रक्त तिलक ,
मृत्यु आलिंगन को आतुर, हे वीर सैनानी, तुम बढ़े चलो,बढ़े चलो, तुम बड़े चलो.

जितेंद्र परिहार “केशव उर्मिल”,
7 जनवरी 2019,अप्रान्ह 4 बजे

# 10.असुर-विध्वंसक , दिव्य दृष्टि, शक्ति पुंज
# " दिव्य-किरण" स्वागत है
# (राफेल के आगमन पर समर्पित)

अविश्वसनीय , अति दुर्लभ , चिरस्मरणीय युग्म ,
सद गुणों की दुर्गुणों पर , धर्म की अधर्म पर ,सत्य की कुसत्य पर विजय के इस अतिपावन पर्व विजया दशमी और वायु सेना दिवस के इस अविश्वसनीय , अति दुर्लभ , चिरस्मरणीय युग्म पर , इस अभूतपूर्व संगम में एक और किरण "दिव्य-किरण" राफेल का स्वागत है.

युद्ध और शांति ,हर क्षण ,हर पल तत्पर दिव्य-किरण.
नभ से नभ ,नभ से थल ,नभ से सागर ,सागर से नभ ,हर बार हर और अचूक निशाना ,अचूक निगरानी.रेडार की अचूक निगाहों से भी दूर , अचूक, अटूट ,सरल तथापि सतत सदैव तत्पर दिव्य-किरण.

गगन विजयी ,सूक्ष्म ध्वनि ,सूर्य किरण सा त्वरित दिव्य-किरण किरण.
अणु विध्वंशक,काल जयी ,ड्रैगन पर भी भारी ,क्वेटा क्या गांधार और ताशकंद तक हैं अचूक निगाहें दिव्य-किरण.

पश्चिम और उत्तर में स्तिथ शुंभ और निशुंभ हैं आज़ स्तभ्ध , जो हो गया है आगमन काल रात्री महा काली रुपेण दिव्य-किरण का.

हिमालया ,पीरपंजाल ,कंचन जुंगा से लेकर कावेरी - ब्रह्मपुत्र ,कच्छ के रण से लेकर इन्दिरा पॉइंट तक ,हर पल हर क्षण ,हर दिशाओं में सजग तत्पर "दिव्य-किरण".

दिव्य दृष्टि ,गगन भेदी ,शक्ति पुंज, असुर-विध्वंसक "दिव्य-किरण" तुम्हारा स्वागत है

जितेंद्र परिहार
8 अक्तूबर 2019, रात्री 8.13 बजे

# 11.नेपाल भूकंप त्रासदी पर भारतीय सेना एवं राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन बल के उत्कृष्ठ प्रयासों को समर्पित
# ईंसा के फौलादी इरादों का असर

ये ईंसा के फौलादी इरादों का असर,
तूफाँ में कश्ती को समुन्दर में चलाने का टशन,
जलजले में,आसमानी आफत में ,
लावे के अँगारो में,हर हाथ को थाम,
हर आँख को पौंछ,हर दिल को जोड़,
हर शाम हो रोशन,हर सुबह हो भूषण,
यही है ईबादत हमारी.

जितेन्द्र परिहार,
01 मई 2015,2230

# 12.पुलवामा त्रासदी के पश्चात एक सैनिक का आत्म मंथन

हमें मरने का गम नहीं, यह जान, यह शरीर हजारों बार देश पर कुर्बान, अफसोस, हम तो अपनों पर कुर्बान हुए , पर मेरे जिस्म , मेरी मिट्टी को गैरों ने नहीं अपनों की बेवफाई ने कत्ल कर टुकड़ों टुकड़ों में तोड़ दिया.
जितेंद्र परिहार,
15, फरवरी 2019,रात्रि 9.30

# 13.प्रहरी

प्रहरी तुम छलनी होते रहो , हम तो प्रेम गीत गायेंगें , तुम अपनी रीति निभाओं हम राजनीति निभाएंगे, तुम हो राष्ट्र की शान, तुम से हम सुरक्षित, हम तो यह बताएंगे,

जितेंद्र परिहार,
17, फरवरी 2019,रात्रि 8.30

# 14.सैनिक का भारत माँ को नमन

शान्ति दूत की लाचारी और पंच शील का चीर हरण , अपने दादा के 62 के बलिदान और लाल बहादुर के 65 के ललकार की कहानी हमने सुनी है , प्रियदर्शिनी दुर्गा के महीसासुर और बांग्ला विजय और पिता के तर्पण की गाथा माँ जननी से सुनी हैं , पोखरण और करगिल की अटल दहाड़ बचपन से मेरे कानों में , युवा खून में बदले की चिंगारी ने मुझे राष्ट्रप्रहरी बनाया,मेरा भाग्य, भारत माँ जो आज में तेरे आँचल में जीवन अर्पण कर पाया ,
मुझे कोई ताप नहीं, कोई शिकवा नहीं, मेरी जननी माँ तेरे आंचल की छाँव से निकले ऊर्जा पुंज ने ही आज भारत माँ को रक्त तिलक करने का यह अमिट सोभाग्य दिया , माँ तुम नाराज मत हो, तेरी गोद से निकल विशाल भारत माँ की गोद में सर्व कालीन रहने का अहो भाग्यत सब को कहां मिलता है, तेरा सपना हर रोज तेरे पास रहूंगा, माँ तुझे शत शत प्रणाम

जितेंद्र परिहार,
18 फरवरी 2019,प्रात 11:3 बजे

# 15.मेरे सपनों का भारत कैसा हो , क्या आज  जैसा हो?

मेरे सपनों का भारत कैसा हो , क्या आज जैसा हो?उठा लाठी , पहन सिर्फ धोती , नापी एक एक इंच यह धरती,जेठ की तपती धूप और लू हो ,चाहे हो बर्फीली ठंडी हवाएं , गरजती , कड़कड़ाती मेघ तड़ित और उफनती नदियों की ललकार , फिर भी पश्चिम से पूर्व ,उत्तर से दक्षिण बापू तुम ढूंडे उस किसान ,श्रमिक , वनिक और आत्म सात किए वोह रक्षक दैव्य दूत जिनके हाथों से हुई यह धरा निर्मल ,स्वच्छ और निरोगी .

बापू तुम्हारे सपनों में थे सब जन एक समान और  गौ, बकरी , कुटीर, कर्म , धर्म और दैव्य जन का सम्पूर्ण समरस यह भारतभूमि .

चन्द्र कलाएं और दिग्विजय सूर्य प्रताप का भगवा और चन्द्र कला और किसान की सोंधी खुशबू से लिप्त हरित का धीर जिसमें युग्म हुआ  गंभीर श्वेत धवल जिसमें समाहित काल विजयी अशोक चक्र का संगम ही तो भारत और ध्वजा का घोषित  सर्वमान्य समन्वय है.

बापू के इन सपनों को  बाबा भीमराव का दृढ़ संकल्प  ,जवाहर की हिम्मत जिसने टूटी झोपड़ी में महल की नींव रखी, शैवक भारत को उंगली पकड़ चलना सिखाया  , लाल बहादुर ने भरी हिम्मत और प्रियदर्शिनी ने फूंकी दुर्गा एवं अणु शक्ति की हुंकार .नरसिंह ने दी अर्थ की शक्ति  ,अटल अथक प्रयासों ने दी  भारत को विश्व अणु  शक्ति की पहचान  .फिर क्यूं हूं मैं अपने ही घर में अनजान और प्रवासी  , मैंने अपने पसीने और खून से लिखी तुम्हारी  आलीशान अट्टालिका और फैक्ट्री की उड़ान , विमानतल , रेल , सड़क पथ को सींचा अपने पसीने से .तज गंगा यमुना और नर्मदा तुम्हारे खेत और खलियान में बरसाया सोना  , फिर क्यूं हूं मैं एक एक दाने को मोहताज , जिस पथ को इन हाथों से बनाया फिर क्यूं हूं बे-घर उसी पथ पर  बिना सवारी ,छोटे से सूटकेस पर बच्चों को बिना पानी रोटी और सवारी मीलों खींच  राशन पाने के लिए .कल तक जिन घरों में दिन रात काम किया आज वहीं बैगाने हो गए.बापू जब भारत एक है तो फिर क्यूं है यह  लाचारी.

मेरी छोड़ो उस बच्चे के मन को तो समझो जो इस कच्ची उम्र में  ही सिर्फ दो माह में ही वयस्क हो गया.उसके सपनों को कौन उड़ान देगा,पतंग , कागज की नाव और जिंदगी को  कौन पहचान देगा .कलम दवात , रात को छांव और जिंदगी के उगते सूरज की कुछ तो थाह लो, ये जमीन, ये नदी , ये हवाएं ,इन बारिश की फुहारों पर उसका भी तो हक है , एक राशन कार्ड पर पूरे भारत में रोटी और पढ़ाई का तो उसे भी हक है,यह अहसास उसके लिए बेशक बेकीमती नायाब है , हे महिर्षी ,इस बच्चे की इस छोटी सी चाहत को इस धरा की धारा और जिंदगी की माला की सिर्फ एक मणि में पिरो दो बस सिर्फ एक मणि में पिरो दो.

जितेन्द्र परिहार , 01 जून 2020 , सांय  5.49 बजे

# 16.जाग उठो चंबल के वीर .

जाग उठो चंबल के वीर .
यह धरा ,यह धारा , यह बीहड़ में गूंजती कोयल कूक , कुवांरी और चंबल की मृदंग सी कलवल ध्वनि.कोलारस शिवपुरी के घने जंगलों के शेर , गुना बमोरी की हो तुम शान , नहीं हो तुम मोहताज किसी ताज के अपनी पहचान के लिए .

लश्कर , मुरार , पड़ाव और तुम्हारी रगों का जोश , तुम्हारी झुझारू हिम्मत,सरल और बेबाक जवानी , चंबल की धार ही तो है शान और पहचान तुम्हारी ,फिर क्यूं हो तुम मोहताज किसी ताज के लिए, ताज नहीं पहचान तुम्हारी, ताज है मोहताज तुम्हारी आन बान और ताकत का ,आज जब ना राज है ना ताज है ,पर नाज़ है मुझे लश्कर पर , इसी धरा में लिप्त है वीर सेनानी का अमर अमिट रक्त,इसी धरा पर है तानसेन की तान .

तिगरा से मंदसौर तक , विदिशा से श्योपुर तक ,भिंड मुरैना की धधक , यही है चंबल के वीर ,तुम्हारी सही पहचान , याद करो १८५७ की गूंज , याद करो चंबल के उन वीरों की निश्चल तपस्या और कुर्बानी जो शहीद हुए भारत मां के लिए , याद करो उस वीरनारी सुशीला की तपस्या को ,जिसने पसीने की एक एक बूंद से सींचा अमर शहीद ब्रह्मानंद की धरोहर को.

याद करो सुभद्रा की उन दो पंक्तियों को ,वोह भी तो हैं पहचान तुम्हारी . याद करो चना कोठार के उस बाढ़े को ,वोह भी है तो पहचान तुम्हारी . प्रभात की ऊर्जा ,बामोर और हजीरे का परिश्रम , खेढ़ापति हनुमान , कंपू की कचोरी और बहादुरा के लड्डू भी तो हैं पहचान तुम्हारी.

सैंतालीस में थे तुम सिर्फ हजार, आज हो करोड़ , फिर क्यों हो सिर्फ महल ही पहचान तुम्हारी .आज जब ना ताज है, ना राज है , आज का ताज और राज तो सिर्फ तुम ही हो , गर्व से सीना तान , है ,चंबल वीर उठो और बनो पहचान जमाने की , देखो कल सब कुछ तुम्हारे क़दमों में होगा,
है चंबल वीर उठो, दिखादो जमाने को यह सच , कल आज और कल सब कुछ तुम ही तो हो , फिर क्यों हो मोहताज तुम किसी खंडित मुहर, मोहरा और बेबस जमाने के.
उठो , जाग उठो चंबल के वीर.जाग उठो चंबल के वीर.

जितेन्द्र परिहार,13 मार्च 2020,10.45 रात्रि.

## 17.मृदंग की थाप पर जड़ता - असमंजस का चक्रव्यूह भेद

मृदंग की थाप पर ,नीर की कल कल पर,
श्लोक ,आयतें और गुरबानी की गुंजन पर .

परिवर्तन की बयार पर, बादलों में नभतड़ित के घोष पर,घनघोर घटाओं की ,
वर्षा की फुहार पर ,मेघ धनुष के सप्तरंगों की छटाओं पर ,
वन में कोयल की गुंजन पर ,शेर की दहाड़ पर,गज की चिंघाड़ पर ,
जन मंगल के हृदय पटल पर ,
नेनों की आस और विश्वास की डगर पर चल .

हे नारी -नर के इन्द्र, सारथी बन, धनुष उठा ,
कुसंशय, जड़ता एवं असमंजस के झंझावत के चक्रव्युह को भेद ,
प्रगति की अमिट छाप ,
सम्मान एवं विश्वास की धारा भारत भूमि से पुनः स्फुठित कर .

जितेंद्र परिहार ,
29 मई 2016, अप्रान्ह 1.08 मिनिट

## 18.आज़ की बात : राज की बात

कुछ तो अलग मिज़ाज है इन आँखों में ,
कुछ तो राज ,राग है, इस शख्शियत में ,
कोई चाहे या ना चाहे ,हर आँख ,हर चाहत क्यों मुड़ती है इस डगर पर ही .
100 करोड़ की एक ही बात.

जितेन्द्र परिहार ,
23 मई 2019 ,रात्रि 11.41

# 19.शरद यामिनी, चंचल यामिनी

शरद यामिनी, चंचल यामिनी, चन्द्र किरण के अमृत रसस्वादन से मदहोश
एवम् उच्छवलित हृदय का आसक्त अनुकंपन,
शरद पूर्णिमा के अमृत से सरोबर वरुण में उठे ज्वार भाटे सी उठती चंचल मदहोश मन में आसक्ति की लहरें, करती आवाहन एक नई दिशा और धारा की उत्पत्ति का.
पुष्प अभी खिला नहीं ,जुल्फ अभी उलझी नहीं ,
चूढ़ी अभी खनकी नहीं, हसरतें अभी रुकी नहीं,
मधुर ऋतु शिशिर की शरद निशा में भी पिघल गए ,बह गए सब बंधन और जुड़ गया एक अभिन्न बंधन .
देव योग से इस धरा पर हुई अमृत वर्षा, धन्य हुई , प्रकृति और जीवन धारा,
बस ऐसे ही बनी रहे सदा ,चंचल , नटखट मधुर , पूर्ण चन्द्र शरद यामिनी, हर निशा हो बस शरद पूर्णिमा ,बस शरद यामिनी.
जितेन्द्र परिहार
31 अक्टूबर 2020,रात्रि 8 .45 बजे

# 20.अविरल मधुर मधुर मधु यामिनी : शरद पूर्णिमा

शरदेय , श्रद्धेय ,लंका विजय पर देव श्रद्धा सुमन की अमृत वर्षा , शीत सुशील ,चंद्रकिरण की अद्भुत अमृत वर्षा, मधुर चांदनी में सर्वत्र अमृत वर्षा, युवा धड़कनों में सिमट लिपटी शर्मीली संकुचित अद्भुत प्रेम वर्षा , मानव , धरा, प्रकृति और जीव जंतु को प्रेमरस में लिपट सर्वत्र सुगंधित अमृत वर्षा .

शरद चांदनी में सर्वत्र पुष्पों और भवरों की मधुर यामिनी , कोमल हरित पर्णो पर मासूम शबनम का मधुर समर्पण और घनी घटाओं को चीरती अमृत वर्षा से मदहोश चारु चकोर की सतत आसक्ति . शरद-चांदनी में चंद्र छबि को चूमती चम्पा और निशिगंधा .

धवल शरद-चांदनी और ताज का धवल रूप ,मधुर यामिनी और युवा आसक्ति का मधुर श्रेष्ठ समागम . आगंतुक शिशिर के कदमों की आहट , प्रेम ,सामंजस्य और प्रकृति के अद्भुत युग्म की अद्भुत छटा ,रजत यामिनी -शरद पूर्णिमा . शरद चाँदनी में हरी दूब को सहज़ सहेज़ शमीवृक्ष पर समीर आलंगन को आतुर मधुर छटा . शरद चाँदनी में जयंत जयेन्द्र आलिंगन को आतुर अरुणित , उज्ज्वलित वरुण और सरितप्रवाह की अलोकिक ,अभूझ और अनकही योगेश्वरी गाथा. स्वान और बिल्ली के अद्भुत प्रेम और निश्चल सामंजस्य की मधुर मधुर यामिनी .

अरुणाश्व,अरुणाग्रज राम का पुन: अयोध्या आगमन की इस पूर्व बेला पर ,हे सुरंजनी ,सुरप्रिया सुररांजिनी रजत यामिनी शरद पूर्णिमा ,बिखरो भारत भूमि पर देश प्रेम ,धर्म एकता,पर्यावरण संवहरण और मानव आसक्ति की अविरल मधुर मधु यामिनी , बिखरो इस धरा ,नभ और अंबुधि पर सर्वत्र सदैव अविरल मधुर मधु यामिनी,
बस अविरल मधुर मधु यामिनी .

“जितेंद्र परिहार”
13 अक्तूबर 2019,साँय 7.05 बजे

# 21.प्रकाश पर्व :दीपावली

एक दीप प्रज्वलित करें उनके भी नाम जिन्होंने किए प्राण न्योछावर ,जिन्हें गए हम भूल .
एक दीप प्रज्वलित करें उस मां के भी नाम जिसने किया अपना सपूत भारत माता के चरणो में निछावर .
एक दीप प्रज्वलित करें उस वीर नारी के भी नाम जिसका पति सीमा से कभी लौट कर नहीं आया , एक दीप प्रज्वलित करें उस बेटी के भी नाम, जिसकी आंखों नें कभी देखा ही नहीं अपने पिता का चेहरा .

एक दीप प्रज्वलित करें उस अंगद पलटन के भी नाम जिसने रोका चीनी दावानल चुशूल के पास ,कर दिए अर्पित अपने प्राण पखेरू इस देश ,इस धरती की आन के लिए बान के साथ,
आओ आज प्रज्वलित करें एक और दीप उस वीर अब्दुल हमीद के नाम जिसने ध्वस्त किया पैटन टैंक और पाक का नापाक इरादा,आओ प्रज्वलित करें एक दीप सैम और जोसेफ के उस जय बांग्ला के असाधारण शौर्य के नाम,
एक दीप हो प्रज्वलित शूर वीर बाना सिंह के भी नाम जिसने किया सियाचिन हिन्द के नाम,एक दीप कारगिल के उन शेरों के भी नाम .
प्रज्वलित करें एक दीप भारत मां के उन सभी स्वतंत्रता सैनानियों के भी नाम जो कट गए ,मिट गए ,सिमट गए गुमनामी में सिर्फ देने हमें आज़ादी की पवित्र पावन बयार .

आओ प्रज्वलित करें एक दीपक उन कोरोना वीरों के भी नाम जो सिमट गए इस धरा में ,सिर्फ हजारों जिन्दगी को रोशन करने .

आओ इस प्रकाश पर्व को सार्थक बनाए , रीति में लिपटी कुरीति , स्वार्थ की स्याह चादर को फेंक , कुधर्म और समाज के विखंडन के घृणित कुटिल चक्र को तोड़ ,आत्म अवलोकन कर सामंजस्य वसुधैव कुटुम्बम की अमिट ज्योत पुन: जलाएं,आओ इस पावन प्रकाश पर्व को सार्थक बनाए .

जितेन्द्र परिहार
12 नवम्बर 2020 रात्रि 9.17 बजे

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

# 22.सर्व सर्वांग , सर्वस्य दीवाली

किसी के लिए मदहोश दीवाली,किसी के लिए जोश दीवाली ,
किसी के लिए पेट  की रोटी दीवाली. किसी के लिए शान ए शौकत दीवाली.

घनी, शिशिर ,श्यामल  ,कार्तिक अमावस्या में  रोशनी और उम्मीद  की किरण यह दीवाली.
नन्हे बच्चे की किलकारियों में आने वाले  उज्ज्वल भविष्य की आहट यह दीवाली.
तोता मैना के धड़कते दिलों में विस्फुटित  प्रेम की यह अद्भुत दीवाली.
अपनों से बिछड़े  बुजुर्गों की सूनी आंखों और अकेलेपन में लिपटे  , बिछड़े हमसफ़र के  मदहोश साथ और यादों  की गहरी कसकों की दीवाली.

राजनीति में मग्न ,आत्ममुग्ध,स्वपन जीवी  राजनेता की अजर अमर सदाबहार दीवाली .नरेश और मित्र  वणिक की धन संपदा  , वाणिज्य , विशाल  आग्नेय चक्र  , रॉकेट और जलचक्री आदि के नियामत की दीवाली.

मध्यम व्यवसायी के मगरमच्छ से द्वंद की  सतत गाथा यह दीवाली .
बाढ से ध्वस्त किसान की झोपड़ी और बाढ में डूबी फसल के साथ साथ उसके बहते अरमानों की दुख भरी दीवाली .

सीमा पर हुए शहीद जांबाज की वीर अर्धांगिनी की पहली दीवाली .
जीवन के समुंदर में  गोता लगाने वाले असमंजस ,अनिश्चय में जकड़े युवा और उसकी अवरुद्ध प्रगति और रोजगार के ज्वलंत यक्ष प्रश्नों से घिरी  यह दीवाली .

पंडित के कर्म काण्ड  ,दीप प्रदीप के युग्म की यह प्रचंड दीवाली , सोम रस और अधर पान की जटिल दीवाली ,द्वापर युग , महाभारत में शकुनि की  कुटिल चोसर पर  कौड़ी और पाँसों के अद्भुत खेल की दीवाली . त्रेतायुग में वनवास प्रवास से  राम के अयोध्या आगमन और कलयुग में लला विराज के लिए आवास प्रयास  ,धरम ,विधर्म ,पूजास्थल  पर  नमन के अधिकारों के चोखट के सामंजस्य की यह  अद्भुत दीवाली.

हे विष्णु प्रिये ,ब्रह्माण्ड पोषक महा लक्ष्मी ,  निर्णय कर ,न्याय कर ,इस राष्ट्र , वसुदेव कुटुंब ,नर नारी ,पशु ,पक्षी ,धरा, प्रकृति पर अन्याय ,अधर्म ,कुटिल ,विषैली फुफकार को ध्वस्त कर ,दंडित कर.भारत वर्ष को सतयुग में पुनः प्रविष्ट कर , पुनः प्रविष्ट कर.
जितेन्द्र परिहार,
23 अक्टूबर 2019 , सांय 5.55 बजे.

# 23.दीपावली

कार्तिक की मधुर मधुर शीतल बयार , चंपा और रात रानी की  नशीली मद होश  सुगंध , अमावस्या के घने अंधकार में उज्ज्वल भविष्य की झिलमिल  झिलमिल रोशनी और राम के पुन: अयोध्या आगमन का अलौकिक प्रकाश .

कुटिल अधर्म पर संस्कार सम्मत ज्ञान ,संयम और सहयोग  के विजय की  अविरल धारा है यह प्रकाश उत्सव,जिसमें सिमट गई भारत संस्कृति.

समृद्ध ,सफल हो हर किसान , वणिक, पथिक ,सैनिक  और युवा .अमिट रहे यह सतत उज्ज्वल किरण  और भारत जीवन दर्पण.

दीपावली के इस पावन अवसर पर आप और आपके समस्त परिवार को हार्दिकशुभकामनाएं .

मेजर जनरल जे के  एस परिहार एवम् परिवार

# 24.प्रजातंत्र का महापर्व राष्ट्रीय आम चुनाव 2019

## ना में जीता, ना तुम हारे, जीता भारत और प्रजातंत्र.

सत्ता पक्ष अथवा प्रति पक्ष दोनों में से आज एक विजयी होगा , परंतु इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है प्रजातंत्र की निष्पक्ष और निश्चल छबि और राष्ट्र निर्माण में हर भारत वासी का योगदान. ना में जीता, ना तुम हारे, जीता भारत और प्रजातंत्र.

# 25.बिहार विधानसभा चुनाव 2020

## इक सहार दूजा सहरसा

योद्धा के तरकश में थे  कमान और तीर अनेक , सहेजे थे दशकों तक शिवा कुंड में पुष्प पदम . एक तीर उस कमान से चला, कटी टहनी और गिरा पुष्प,
फिर भी तीर कमान  समय चक्र और हस्त संयोग से बना शिखर पताका ,दूजा तीर चला बिना कमान के ही , जिसने साधे दो निशान , इक सहार दूजा सहरसा.
जितेन्द्र परिहार
3 नवम्बर 2020 रात्रि 9.37 बजे

# राष्ट्र निर्माण , सामंजस्य एवं
# युवा शक्ति के  महत्व के प्रति समर्पित

## 26.राहगीर बढ़े चलो

मिट्टी में बीज, मिट्टी से जुड़ा मानव, मिट्टी से सना युद्धवीर,  मिट्टी की सोंधी खुशबु लपेटे हुए कृषक, मिट्टी में गड़ी गहरी जड़ों वाला वृक्ष और मानव सदियों तक स्वच्छ प्राण वायु , घनी छांव और इतिहास का गवाह खुद इतिहास बनाता है, हर तूफान, हर झंझावत एक हल्के से झोंकें सा है.
हे विशाल, दृढ निश्चय से बढ़े चलो, यह भी एक पड़ाव था, वोह भी एक पड़ाव था, मंजिल अभी आगे है, कल जरूर आसमान कदमों में होगा,
बढ़े चलो ,बढ़े चलो, बस बढ़े चलो.

जितेन्द्र परिहार
09 नवम्बर 2018,2315 बजे

## 27."युवा की आग,युवा की आस, युवा की थाप_"

युवा की आग,
युवा की आस को पहचान, युवा की चाह को पहचान.
युवा के आगे बढ़ने की चाह, युवा की सद्भाव, सुधर्म, वर्ण विभेद रहित, सर्वजन, सम रस, सम जस व्यवहार की चाह, युवा के भारत माता की सेवा, रक्षा की चाह, हे, तंत्र पुरुष, युवा की आत्मा, क्षमता और विश्वास को पहचान, संचार से संहार की अदम्य आग को पहचान, इससे अनजान न बन, शांति जननी है छटा है, विघटन नहीं है, ऊर्जा पुंज का सदुपयोग कर. हे कुँवर, कृष्ण बन इस ऊर्जा के सुदर्शन चक्र से इतिहास लिख, युवा की चाह युवा की आस का पार्थ बन, घटन, विघटन के चक्रव्यूह को तोड़, इति की गति न बन,  कालजयी बन , गति की इति, इति की गति न बन.

जितेंद्र परिहार,
16 सितंबर 2018, रात्रि 11.45 बजे

# 28.समरस ,नवरंग ,एक रंग

जल ,नभ ,थल ,उद्वल तरंग ,वायु बवंडर ,मेघा तड़ित ,सब पर भारी रंगों की फ़ुहार ,
नवजतन करें ,प्रण वचन करें,हर दिल ,हर हाथ,हर विचार,हर आचार ,
हर निशान रहे अविचलित,अनन्य युगों-युगान्तर तक.
अभेद हो भारत जल ,नभ ,थल ,चर - अचर और गण.
तथापि शून्य हों ,दुष:कर्म,दुविचार,दुविधा और दुसंगत.
सप्तरंगो के समागम से उत्पन्न श्वेत सूर्यकिरण समान बन राष्ट्र रहे अक्षुण.
राष्ट्र नमन के साथ ,
जितेन्द्र परिहार ,
24 मार्च 2016

# 29.काल चक्र की अविरल धारा

कुछ सपने कुछ हकीकत , कल के गुजरे पल कब तक और कहां तक समेटू मैं,
उम्र के इस पड़ाव पर , सफर के उस पड़ाव पर इस काफिले में कल को कैसे समेटूं मैं, सपनों में लिपटी यह खुशनुमा चादर सपनों ही में हसीन है , धरा के कंपन , हसीन मधुर बयार , जेठ आसाढ़ की तपस और लू में कब तक बहेगी, घने वनों में भी विशाल वृक्ष इस उमस में झुलस गए तो फिर इस तिनके की बिसात ही क्या है.
कल कितना भी हसीन रहा हो , रहेगा तो कल ही , आज कितना भी दुश्वार हो , आखिर आने वाले कल की आहट और बीते कल के बीच इस जीवन धारा का अमिट सामंजस्य और वास्तविक जीवन तो आज ही है.
हे मेरे मासूम बचपन , मेरा युवा अल्हड़पन , तुम्हारा फिर से आना और मुझमें समाना कितना हसीन होता , पर तुम अब लौट भी नहीं सकते और अगर फिर मिलो तो भी आज उसे समेट नहीं सकता,
बस तुम्हारा एहसास ही काफी है दो पल के किए , जिंदगी तो आज है और धीरे धीरे आने वाले कल के साथ साथ मुकाम पर दस्तक देती रहेगी , यादों के हसीन कल बस अब और पास नहीं आओ, मुझे तो बस आज की इस भीषण तपिश को सहने दो , यही है ,धरा और जीवन और काल की अविरल धारा , बस इसे ऐसे ही बहने दो , है काल के कल बस उस झरोखे में ही रहो , आज जैसा भी हो ,आज ही है , मुझे तो इस जीवन रूपी महाभारत में काल चक्र की अविरल , सतत गति में ही अपनी गति निभानी है,
बिना पार्थ और द्रोणाचार्य झूझना है
कल मुझे बस चलने दो , बस चलने दो।
25 मई 2020 ,7.55 प्रात:

# 30."तन्हा तन्हा "

मुद्दत हो गई चलते तन्हा तन्हा ,
कुछ गुजर गई तन्हा तन्हा , कुछ गुजर भी जाएगी तन्हा तन्हा,
किस्मत की लकीरों ने तो लिखा सिर्फ तन्हा तन्हा ,
हाथों की लकीरों ने कहा पढ़ो मुझे भी जी भर के,बांटो खुशियां दिल खोलकर ,
पर ना रखो उम्मीद जमाने या ऊपर वाले से ,
इन लकीरों में लिखा है सिर्फ और सिर्फ पसीना बहाना , जितना बहाओगे पसीना उतना ही सुकून और ऊंचाई मिलेगी , हो आसमान छूने की हिम्मत और रखो सपने बुलंदियों के, सींचों इन्हें पसीने से, मंज़िल जरूर मिलेगी,

मेहनतकश इंसान क्यों डरे तन्हाई से , बस चलते रहो डगर डगर , फिर चाहे हो तन्हा तन्हा ,सफ़र हो चाहे सड़क या फिर पगडंडी का , पथ पर हों कटिलें कांटें ,या फिर हों नुकीले पत्थर ,डरना क्यों ?सफ़र जो सिफर से शुरू हुआ शिखर पर तो पहुंचेगा पर खत्म तो सिफर पर ही होगा .

जब तकदीर के कागज पे तारीख और वक्त साफ साफ दर्ज हो , ना एक पल पहले ना एक पल बाद ,तो फिर क्यूं हो खौफ उस वक्त के आने का , आने दो उस पल को ,खुलने दो राज उस पल का , आखिर वोह पल ही तो है इस सफ़र की मंज़िल और अंजाम भी और वोह भी तन्हा तन्हा. फिर क्यूं डरें हम, क्यों हो शिकवा जमाने से , फिर क्यूं चले साथ ले कर गमों की बारात, सब साथ हों या रहें हम तन्हा तन्हा .फिर क्यों हो गम दिलों में , थोड़ा जरा मुस्कुरा तो लो, जी भर के हंसों, जी भर के जियो ,लुटा तो दो यह खुशी जमाने में.

कितना हसीन है यह सफ़र, यह अंदाज़ , जिसे बयां करना भी मुश्किल . हो जिंदगी की महफ़िल या हो मंजिल , उठाओ ये लुफ्त तन्हा तन्हा, आख़िर तो हूँ मैं बस तन्हा तन्हा.

जितेन्द्र परिहार
8 जून 2020,रात्रि 8.45 बजे

# 31."प्रगति की राह"

ना राज से ना नाज से,ना बाज़ से ना ताज़ से,
ना दंभ से ना खंभ से,ना आकाश से ना पाताल से,
ना इंद्र से ना पार्थ से,ना जय से ना पराजय से,
ना मन से ना धन से,ना तंत्र से ना मंत्र से,
ना धर्म से ना विधर्म से, ना वर्ग से ना वर्ण से,
ना शह से ना मात से, ना ऊष्म से ना शीत से,
ना पुष्प से ना शूल से,ना तड़ित से ना जड़ित से,
ना विषम से, ना कसम से,ना कलम से, ना तलवार से.
बदलेगा जीवन,
पर्ण - प्रकृति, संस्कृति -पोषण एवं जनतंत्र विकास से.

जितेंद्र परिहार,
26 अगस्त 2018,अपरान्ह 12.13 बजे

# 32.उत्कर्ष

उत्कर्ष क्या है, पराकाष्ठा क्या है, राज सत्ता, राज दंड प्रमुख की शक्ति, धर्म श्रेष्ठ की सलाह से विरक्ति, राज दंड की स्व विवेक से तृप्ति, न्याय दंड पर श्रेष्ठ युक्ति,
जन: गण, वर्ण, संघ, धर्म, पितृ, सखा के सात विभिन्न सुरों की सारंगी से उत्पन्न राग स्वराज शासन की पराकाष्ठा है,
विलोम इसके सतरंगी सारंगी से विमुखता ,विरक्ति, झंझावत, भूचाल या दानावल की कु:आहट है.
हे राज शीर्ष ,न्याय, धर्म, वर्ण रहित, गण युक्त, गणतंत्र की रक्षा कर, पोषण कर, विषदंश का संहार कर.
क्या दुख:, क्या सुख, उत्कर्ष क्या है, पराकाष्ठा क्या है,
उत्कर्ष की पराकाष्ठा ही पराकाष्ठा का उत्कर्ष है.

जितेंद्र परिहार,
16 सितम्बर 2018, रात्रि 8.45

# 33.'पुष्प और भँवरा"

फुलवारी में छायी घटा, एक फूल से खिले लाख फूल,
निशगंधा, लक्ष्मी आसन और गुलाब, इन सबसे खिला प्रभात.
सूर्य छटा, सावन की घटा, वसंत की पावन बयार, रातरानी की महक और जनतंत्र की पुकार, सब पर है, सर्वजन का अधिकार, कृष्ण - लालकृष्ण पदम से उत्पन्न बटवृक्ष, उस पर स्थित बाज़ घोंसला, चंदन वृक्ष पर लिपटे सर्पदंश. समृद्धि के मधु पर नागमणि का कुटिल बाहूपाश. हे रणवीर, धनुष उठा, बाण चला, धरा से उत्पन्न कर अमृत जल धारा, अमृत मधु को मुक्त कर, बाज़ का दरप भंग कर, वर्ण को विभेद कर, गंगा धर, मोहन दास ज्योतिबा, कांशी, श्यामा एवं लाल के कालजयी स्वर्ण सपनों को रसित कर.

जितेंद्र परिहार,
16 सितंबर 2018,10.15 रात्रि.

# 34."कहाँ से चले, कहाँ तक चले"

कहाँ से चले, कहाँ तक चले, जोड़ एक सिरा, शिखा से नख तक, तर्जनी से तर्जनी तक, समुन्दर से समुंदर तक, काराकोरम से रामेश्वरम तक द्वारका से पारादीप तक, लक्ष द्वीप से कार निकोबार तक, पूरब से पश्चिम तक, पुष्पों की सुगंध, रजनी
गंधा की बयार से, अमृत जल के बहाव की कल कल ध्वनि में, हर पल, हर जन, हर गण ने आवाज उठाई, हे, शिखर धीश , आत्म तुष्टि, आत्म गान, आत्म संभूती, आत्म पृत्यंचा में समय व्यर्थ न कर, राज, काज, बहता पानी, पल, प्रलय, काल अकाल क्षण भंगुर हैं, हे महा मंडल , जन गण का विश्वास अटूट श्रेष्ठ अर्पण है, इसका विघटन, विखंडन प्रलय की आहट है, समुद्र जल के भवन्दर की ध्वनि को पहचान, समय की आहट को पहचान, भविष्य को भूत न कर, जन सैलाव की भूगोल का इतिहास और इतिहास के भूगोल परिवर्तन राह, चाह अवरुद्ध न कर. राज कर्म, राज धर्म, समृद्धि की आस को गौण न कर,
भविष्य को भूत न कर अन्यथा भूत ही भविष्य है भूत ही भविष्य है.

जितेंद्र परिहार,
16 सितंबर 2018, रात्रि 11.25 बजे,

# 35.राज नीति और राजनीति

अनीति, नीति, सद नीति, कुनीति के जंजाल से मुक्त राज नीति को राज नीति ही रहने दो, राजनीति के दल दल की राजनीति में परिणित कर उसकी परणीति ना कर. अपनी गति, राज रीति, जन सैलाव को सम रस, सम भाव, ससंभव संउन्नतती की हो, यही राष्ट्र विकास का धर्म है, कण है, ऊर्जा है, उन्नति है, परिणीति है.

# 36.कलयुग की वैतरणी

तुम हो आज की वैतरणी , कर आत्म सात सर्व प्रथा , धर्म ,विधर्म , दशा , दस्यु , नृप ,कर्म कांडी हुए अमृत और स्वर्ग के अधिकारी .

लालकृष्ण , अटल ,मनोहर युद्ध के सारथी ,श्यामा भए भगीरथ , काशी बसे धीश , हुगली में कैलाश ,हिमालय उठाए माधव , चंबल में नरेंद्र राज ,आदित्य चले गोमती ,बिठूर गली बैठे सर्व धाम. सह्याद्रि में देवेन्द्र ,साबरमती में अमिट अमित रूप धारा ,थार मरु में अविरल हरित वसुंधरा , रमन ,बद्री विशाल ,केदार रज और ऋषिकेश का त्रिवेंद्रिय संगम ,सर्वत्र सुख ,शांति और धर्म की धारा.

कलयुग के धर्म और अधर्मों को आत्म सात कर, पवित्र कर तुम हो आज की वैतरणी.

है मां अमृत धारा शत शत नमन

जितेन्द्र परिहार

27 अक्टूबर 2019 , प्रात:0.45 बजे

# 37.उलझन में गुथी अधूरी गाथा

जन्म जन्मों की गाथा को तुमने लिखने के पहले ही मिटा दिया .उन खुशियों को पंख लगने के पहले ही उड़ा दिया , सूनी आंखों के स्याह आंसू रातों में बहने के पहले ही पलकों में समा गए , तुमने कभी उन्हें छुआ नहीं , मधुर लम्हों की लड़ी को असमंजस की गुत्थियों में उलझा सदा सदा के लिए दफना दिया . कितनी बेदर्दी ? चिंदगी भर की खुशी को चुरा और नजरे चुरा कर गुजर गए. बस एक बार ठिठकते तो सही . बेवफाई और बेदर्दी की यह कैसी इन्तहा ,तन मन चुरा संत बन, राजपथ पर सरपट दौड़ मधुर यामिनी को अमिट चंद्रग्रहण बना गए.

विप्लव की इस अश्रु धारा नें हर विजय गाथा को शिखर से बस एक पल ही दूर श्याम क्षितिज में समेट विजयरथ को रोक दिया . जीवन की हर जीत को बस इक पल में ही भवंडर में मिला दिया . इस आत्म विप्लव दानावल के कुपित ग्रहण से कैसे संभव हो मुक्ति .
खुश कभी तुम होना नहीं , रोना कभी तुम होना नहीं , श्रापित क्षितिज पर पुनःजन्म , विजय का जीवन प्रण ,धैर्य और धर्म का बृहम युग्म ही होगा मुक्ति पथ दर्शक .

“ जितेंद्र परिहार ‘’
26 जनवरी 2020 रात्रि 10.15 बजे

# 38.“ साबुन की बट्टी ”

बचपन से लेकर आज तक साबुन की नई बट्टी को देख कर मन बहुत खुश हुआ , भरा पूरा सुंदर दिलकश साबुन , मानव शरीर का मैल निकालते निकालते खुद घिस गया , घिसी हुई साबुन की पतली बट्टी और जीवन में कितना सामंजस्य है जब तक ताकतवर हो , मैल निकालो , सब खुश हैं , घिसी हुई पतली बट्टी को फेंक नई बट्टी से फिर काम निकालो ,बेहिचक पूर्ण चंदन लेप ,
हवा में इतराते खुले केश , वातावरण में नशीली सुगंध ,मधुर मुस्कान और
स्वच्छ धवल वस्त्रों से पल पल छलकता दर्प ,सब तो बस इस बट्टी की है धधक .इस सुगंध और दर्प से बढ़ते चले ,यही है जिन्दगी , आज घिसे साबुन ने यह राज जाना , डर किस बात का , उलझन किस बात की,

देर से ही सही , सही राह तो पकड़ी , कल तक हम साबुन की साबुत बट्टी थे ,उन्होंने जिसे घिसा, वोह आज साबुन की बट्टी हैं ,कल तो दोनों ही घिसी बट्टी होंगे ,यह चक्र शाश्वत , सम्यक,आत्म निर्भर , निर्भयी और निर्भीक है , सिर्फ समय की परछाई हर कोण से अलग अलग देवता अथवा दानव का रूप धर लेती है.आज भी तुम मानव हो , दानव नहीं,कल भी तो तुम मानव थे देवता नहीं .अपितु तुम्हे अपने और गैरों ने स्वार्थ सिद्धि हेतु पूजा ,कल भी तुम एक मानव अथवा साबुन की बट्टी ही रहोगे .

“ जितेन्द्र परिहार “
20 जनवरी , प्रात : 00.12 बजे .

# 39. " तमन्ना"

उनकी आंखों में अश्कों को छल्का के मुझे खुश करने की कोशिश ना करना .
किसी की थाली को सरका मेरे लिए पकवान सजाने की कोशिश ना करना.
किसी के छप्पर को उखाड़ मेरे लिए स्वप्न जयी महल बनाने की कोशिश ना करना .
हर दरख़्त को अपनी टहनी से अलग करने की कोशिश ना करना , हर पंछी को अपने घोंसले में समेटे हुए नाजुक नाजुक बच्चों से अलग करने की कोशिश ना करना. घर चाहे मेरा हो या उनका ,सिर्फ चार दीवारें ही नहीं होता , उसमें सारी उम्र , सात पीढ़ियों का अहसास होता है .

कुछ दिलों की धड़कन , कुछ दिलों की शिकायतें , कुछ दिलों के वायदे , कुछ दिलों का रूठना , कुछ दिलों की मनुहार , कुछ दिलों की मन्नतें , कुछ दिलों पर खैरात ,पहली सांस से आखिरी सांस तक हर पल ,हर दम गिरना , उठना ,बैठना , सब कुछ तो इसी बारादरी में हुआ. आज जब मेरी यहां से विदाई की बेला है तब तुम मुझे भूल उन्हें खुश करो तो कोई गिला नहीं.पर मुझे खुश करने के लिए किसी भी आंख में आंसू छलके यह मुझे मंजूर नहीं .
आज नहीं तो कल ही सही , यहां नहीं तो वहां ही सही , कभी ना कभी ,कहीं ना कहीं दो पल के लिए तो आंखे चार होंगी तभी पूछेंगे तुम्हारी नज़रों की शरारत और दिलों के आशियाने से बेदर्दी से हमें बेदखल करने की वजह और दास्तान.

पर आज तो बस यही ख्वाहिश है कि तुम मुझे खुश करने के लिए किसी भी आंख को गीला ना करना.चिड़िया के पंखों की कोख में बैठे नन्हे बच्चों को आसमान की उड़ान तो लेने दो , मुझे खुश करने के लिए उनकी आंखों को गीला ना होने दो.

“ जितेन्द्र परिहार ”
9 नवंबर 2019 सांय 6.15 बजे.

# 40."सहोदर"

मैं भी तो उसी कोख से जन्मा जिसने तुम्हे जन्म दिया , मैं भी तो उसी जमीन पर खड़ा हुआ जहां तुमने चलना सीखा, मैं भी तो उसी आसमान के नीचे रहा जहां तुम रहे,
उसी दामन ने मुझे भी दुलार थपकार दी जिसने तुम्हे छांव दी.

उसी चश्मे में मेरा भी आचमन हुआ ,जहां तुमने भी प्यास बुझाई. उसी सूरज की तपिश ने इस काया को तराशा जिसने तुम्हे भी ऊर्जा दी , उसी चांदनी में मैंने भी प्रेम की दो नज़रे चार की जहां तुमने भी प्रेम गीत गुनगुनाए.मैंने भी उसी हिमालय से शीत बयार ली जिसने तुम्हे अमृत धारा दी.उन्हीं सितारों की दुनिया में ,हे मेरे सहोदर , उस आंचल को क्यों तार तार करें ,जब मां ही चल बसी हो. दो गज की इस अमानत को क्यों हम दीवार बनाए ,जब पिता ही साथ ना हों. जब कल भी हम साथ साथ थे तो आज भी क्यों ना साथ साथ हों , उन गुज़रे पलों की मधुर यादें समेटे तो बेहतर , सिर्फ कुछ खट्टे फलों की खातिर क्यों हम दिलों में दीवार बनाए.

आखिर इस दुनिया के बाद भी तो उस दुनिया में साथ साथ रह ,जननी के सवालों का जवाब तो देना ही है.वहां भी तो हमें उसे अपने तमाम कारनामों का हिसाब तो देना ही है , फिर क्यों इतनी बेदिली और बेरूखी रखें, चलो एक बार फिर मुस्कुरा तो दो,
चलो एक बार फिर एक दूसरे की पीठ को जरा थप थपा तो लें ,एक दूसरे के दिलों की धड़कन को बस एक बार ,सिर्फ एक पल के लिए सुन तो लें ,शर्तिया खून और धड़कने एक जैसी ही होंगी ,आखिर मां का दामन भी तो एक ही है.पिता की चाहत की छत भी तो एक ही है , फिर यह दूरी क्यों,यह बेरूखी क्यों .

चलो अपने दिलों की धड़कन को जरा तस्सली से सुन तो लें, जरा सुन तो लें.

'' जितेन्द्र परिहार ''
9 नवंबर 2019, सांय 7.15 बजे.

# 41.फैसला

उन्हें लगा आज  फैसले की घड़ी है. फैसले को भी आज इस बात पर फैसले का इंतजार है , पर इस बात पर कौन यकीन कर फैसला देगा की हमें तो सिर्फ तुम्हारे इकरार करने के फैसले का पूरी जिंदगी इंतज़ार है, इस फैसले के सिवा कुछ और फैसला मुझे मंजूर नहीं ,पर मुझे मालूम है तुम्हे इकरार करने के फैसले  से  आज़ इंकार है  . क्या पता जिंदगी की शाम होते होते इंकार इकरार में बदल जाए  , इसी उम्मीद पर चलते रहने में कोई हर्ज तो  नहीं  , आखिर जिंदगी में उम्मीद और आखिरी उम्मीद तक  उम्मीद बनाए रखना ही तो जिंदगी का सफर है ,
कायनात में हर किसी मद्दे पर फैसला देने वाले  लला को भी  तो आज खुद अपने ठिकाने के वजूद पर भी फैसले का बेसब्री से इंतज़ार है.

जितेन्द्र परिहार
29 सितंबर 2019 , रात्रि : 09.15

# 42."तिनका "

जमीन  से निकले  ,जमीन पर बड़े हुए  , जमीन से जुड़े रहे  ,हर तिनके तिनके की तुमने परवरिश की , इन  हाथों से हर हाथ को थाम  ,हाथ का साथ बुलंदी तक पहुंचा  , कोई गुनाह नहीं कमल पुण्य है ," कमल -  दंड" नारायण और लक्ष्मी दोनों का उत्कर्ष है .  है देवों के नृप देवेन्द्र ,कायनात में भी तो तिनकों का वजूद है  , तिनका तिनका जुड़ घोंसला बना  , बस एक हवा का झोंका ही काफी है इस  तिनके को  स्वर्ण महल  भस्म करने के लिए . बस एक ही चाहत है ," है भूमि पुत्र " सदा जमीन से जुड़े रहो , जमीन और तिनके ही तो आखिर तक साथ निभाते  हैं ,यह  भी तो एक कटु सत्य है , सांस रुकने के बाद भी तो घांस के तिनकों की आग ही वैकुंठ और मोक्ष के  पथ वाहक हैं.

सिर्फ जमीन और तिनका ही तो आपका है फिर उससे संकोच और दूरी क्यों.
उन्हें  भी यह बात समझ में आए तो बात बने

जितेन्द्र परिहार
३० सितंबर २०१९ , प्रात: १०.३०

# 43.आग और आँगन

यह आग कैसे लगी, कैसे बुझेगी.
दरिया किनारे गाँव, गाँव में दो भाई, और सब तरह के परिजन.
गाँव में किराने की दुकान, बगल में पतंग बाजों का अड्डा. एक भाई चांदनी में मशगूल तो दूसरा रोशनी में खुश, पिता हुए दूर, पर भाई भाई बरसों साथ साथ , भोजन में सरसों का साग और दाल साथ साथ, बरसों नहाए दरिया में साथ साथ.
गुलाब और गेंदे की महक थी साथ साथ,खेतों में पसीना बहाया साथ साथ, हल, खल, हल्दी और मेहंदी का एक जुट रहा साथ साथ , तभी एक पतंग उड़ी , मांजा था पतंग बाज के हाथ , कटी पतंग रोशनी के घर, मांजा लगा दुकानदार के हाथ ,जोर से खींची झोल, लपेटा चांदनी का गला, रोशनी पर डाली बला, दोनों हुए लाल लाल, टूटी प्रेम की डोर डोर, लिपटी ईर्ष्या की डोर डोर , अब ना थे दोनों साथ साथ , आया बाज , झपटी पतंग, घरों के बीच के आंगन पर हो गया दंगल,घरों पर हुए काबिज दुकानदार और पतंगबाज,

घर की छत से दूर हुई चांदनी और सूरज की रोशनी , फैल गई आग की तपिश , सूख गया दरिया का बहाव , कचहरी की लड़ाई में हो गए पैसे पैसे को मोहताज,
गुजर गई दोनों की जवानी ,हो गई दिलों से मोहब्बत की रवानगी.
यह आग कैसे लगी, जो निगल गई जिन्दगी के पांच दशक , ले गई आब , अमन और आबरू.
और अब हाथ में ना तो आँगन है और ना ही छप्पर , खपरैल का तो हुआ हाल ही बेहाल ,आंगन भी दुकान और पतंग मे सिमट गया,उसे जहरीला धुआँ निगल गया.
यह आग ना बुझी है, ना साहूकार बुझने देंगे, चांदनी और रोशनी दोनों ग्रहण में सिमट गये,
यह आग कैसे लगी, पर ना बुझी है, ना हमसफर हम राज़ इसे बुझने देंगे,
आओ चांदनी और रोशनी, फिर से दरिया के आचमन से चैन मोहब्बत और अमन को चखो , करो दिलों और जमाने को रोशन.
आग को भूल, राख को राख ही रहने दो, बुझते शोलों को हवा से दूर रख, शोलों को आग का गोला ना बना. मुहब्बत की कसम , अपने जन्म दाता को याद कर , आग को आग से दूर रख , आंगन को मुहब्बत का पैगाम ही रख, जंग का मैदान ना बना. आंगन को जंग का मैदान ना बना.

जितेंद्र परिहार,

# 44.नारी शक्ति  के प्रति समर्पित

## नारी शक्ति: नारी तुम जननी हो,
## जग धरणी हो ,जीवन तरणी हो.

नारी ना अबला है  ,ना अशक्त है, यह तो जननी है  ,जीवन की ज्योत  ,प्रकृति का अवतार और ऊर्जा का सूर्य पुंज है. माँ  ,मन,जन,पुत्री  ,भार्या  ,सखा राधे  ,भक्त मीरा  ,दुर्गा बन समस्त विकृतियों के संहार और ध्वस्त करने में सुद्रढ़ ,  सक्षम एवं सबल, जीवन रस के एक एक कण में प्रबल प्रमाण .

नारी तुम जननी हो ,जग धरणी हो ,जीवन तरणी हो ,जीवन जल हो ,

जीवन दल हो ,जीवन बल हो.

जितेंद्र परिहार,
02 सितंबर 2018, रात्री 9.49  बजे

# 45.विश्व महिला दिवस पर समर्पित

## क्या कहूँ ? नारी और राष्ट्र : रूप अनेक, स्वर एक

क्या कहूँ ?
माँ ,यशोधरा,देवकी,कौशल्या ,सुमित्रा या पन्ना धायी.
क्या कहूँ ?
राधा ,मीरा ,सावित्री या रानी माँ.
पुलक, सहज ,पुल्लकित,नवशिशु समान,सहज सुघड़ ,सुछंद और नवयोवना .
क्या कहूँ ?
पुत्रवधू,पोत्र-जननि,भार्य भरणी,वेतरण तरणि.
क्या कहूँ ?
ऊर्मिला ,निर्मला ,योगेश्वरी ,अपर्णा ,राजश्री , अंशु ,दैव -दिव्या या चंद्रकांता कहूँ.
शैलपुत्री, ब्रह्मचारणी, चन्द्रघन्टा, कुशमन्दा, स्कन्दमाता,कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी
और सिद्धिदात्री ,
क्या कहूँ ?
माँ कहूँ,भार्या कहूँ ,पुत्री कहूँ ,बहना कहूँ या पुत्रवधू ?
नारी तुम एक ,रूप अनेक .राष्ट्र तुम एक ,रूप अनेक.
मातृ भूमि ,जन्म भूमि ,कर्म भूमि ,धर्म भूमि,शरण भूमि और तरण भूमि .
तथापि दोनों हीं हैं जन्मदात्री ,धर्मदात्री,गुणदात्री,संस्कारदात्री,अंतर्धारणी,सहधारणी,
भारधारणी,सहचरणी, निरामय,समामय,निराकार,निरविकार पर सराकर.
हे सृष्टि जननि , सृष्टि धरणी , जीवनदात्री और जीवनदायी. क्या कहूँ ?
नारी ,धरती तुम एक ही हो, एक ही धर्म ,राष्ट्र धर्म ,एक ही वचन ,प्रेम वचन ,एक ही विचार ,सदविचार. एक ही कामना ,सदकामना. रूप अनेक, आँचल एक .
एक ही व्रत ,देवव्रत.
नारी और धरती सदैव कोटी कोटी नमन ,

जितेन्द्र परिहार ,
04 मई 2016, रात्रि 11.39.

# 46.मां तुम अद्भुत हो ,मां तुम अद्भुत हो : शत शत नमन

मुंशी संग बंधी डोर,जीवन पथ पर यशस्वी मां शारदा का प्रगट अवतार, सत्य , निष्ठा , निश्चल कर्म और सहृदय की मूरत ,ममता से आंचल में सूर्य अवतार मुन्ना को ढाला एक कर्मठ अद्वितीय सुदृढ राष्ट्र भक्त ,सरस्वती की मूरत मां शारदा ने जोड़ी किरण .
मां तुम्हारा आंचल विशाल , मां तुम्हारा संयम प्रबल, मां तुम्हारी उंगली महान जिसे पकड़ मुन्ना हुए विशाल, देवेन्द्र झुके तुम्हारे क़दमों में , छोड़ी तुमने काया और मोहमाया .
चल पड़ी महा प्रयाण पर , अपितु राष्ट्र हुआ धन्य पाकर तुम्हारे एक शताब्दी के अतुल भंडार को । शारदा तुम रूप बदल निवेदिता हुईं ,मां तुम अद्भुत हो ,मां तुम अद्भुत हो .
सदा हमारे कण कण में,सदा हमारी सांसों में , मेरा जीवन कुछ भी नहीं , मेरा धन कुछ भी नहीं ,मेरा संचय सिर्फ तुम्हारा आंचल ,
हर पल हर सांस सिर्फ तुम हो मां.

शत शत नमन

जितेन्द्र परिहार
९ सितंबर २०१९

# 47.नेत्र एवं अंग दान के प्रति समर्पित
# " नेत्र दान का अजर अमर नीर नीर "

नजरों पर चले शूल तीर तीर , जीवन प्रसंग हुए चीर चीर ,
सपनों पर लगे तीर तीर, खुशियां हुईं चीर चीर.

जीवन के सतरंगी इंद्रधनुष पर छायी काली बदली,
बच्चों की अच्छी परवरिश और माँ पिता की सेवा के
सपने हुए चीर चीर.

तभी उदित हुई नेत्र दान की एक किरण,कर चीर चीर अंधियारा.
एक दुखियारी, शोक संतप्त माँ ने ठानी मेरे उद्धार की धनुष प्रत्यंचा,
अपने युवा पुत्र को असमय खोने के दुख को तज,
मोह माया को कर तीर तीर ,करा नेत्र दान का अपूर्व अर्पण.
तज गया दो तीर तीर जीवन का अंधकार.

एक माँ ने जन्म दिया, धरती मां ने पालन आँचल दिया और
मां तूने मुझे, मेरे परिवार को पुनः जन्म दिया.दुखों को किया चीर चीर,
जीवन में भर दिया खुशियों का अमृत नीर नीर.

तेरे आँसू गंगा जल, तेरा प्रण रणभेरी ,तेरी हठ धीर धीर .
अजर अमर हो यह संकल्प तेरा ,
इस पथ पर जुटें सब मानव जन लेकर नेत्र दान की अखंड मशाल डग डग ,गाँव गाँव ,देश देश ,सागर सागर , पार पार .

माँ तुझे शत शत प्रणाम.

"जितेंद्र परिहार"
26 अगस्त 2018,प्रात: 9.51बजे

# 48.कजरी के मन की बात : माँ, मैं तुम्हें कब देखूँगी ?

माँ, कमली बोली ,फूलों के रंगों से तितली रंगबिरंगी बनती है,
माँ रंग कैसे होते हैं?

माँ,कमली बोली ,सूरज दिन में उजाला ,चाँद रात में दूधिया चाँदनी फैलाता है ,
मेरे तो रात और दिन दोनों एक समान हैं ,
माँ चाँदनी कैसी होती है?

माँ कमली बोली , सावन आया , मेघा बरसे ,धरती पर छायी हरी हरी चादर ,
देख मोर ने पंख फैलाए और
हाथों मेँ रचि हरतालिका की मेहंदी ,
माँ सावन कैसा होता है ?

माँ कमली बोली ,भैया राजकुमार सा प्यारा राज दुलारा है
माँ भैया कैसा दिखता है?

माँ सब कहतें हैं ,तुम बहुत सुंदर हो ,ममता की मूरत हो ,
तुम्हारी मुस्कान जीवन जल है , माँ तुम्हारे आँसू ही मेरे मेघा हैं,
तुम्हारा आँचल मेरा घर ,मेरा आसमान ,स्पर्श ठंडी बयार है ,
तुम्हारे बोल मेरा जीवन है , धड़कन मेरी ऊर्जा है ,
माँ,तुम्हारा आँचल ,मुस्कान और देव तुल्य मूरत कब और कैसे देखूँगी ?

हे राधे,कृष्ण, नेत्र किरण जगाएँ ,हे नरेन्द्र नीरस जीवन में संजीवन रस घोलें ,
कनक, कमल,असलम,जॉनी आओ नेत्र दान बढ़ाएँ,
इसे जीवन की रीत  बनायें,जगत प्रकाश बढ़ाएँ .
कजरी को माँ के सुनयन दर्शन कराएं ,
माँ तुम कैसी लगती हो , माँ तुम कैसी लगती हो.

जितेन्द्र परिहार ,
27 अगस्त 2016 ,6.37 साँय कालीन

# 49.दूर करें अंधकार का अहंकार :नेत्रदान ,महादान

दूर करें अंधकार का अहंकार ,
दो कमलनयन का दान बने अमृत का सागर ,
आओ जागृत करें स्वप्निल ऊषाकिरण,आओ हाथ बढ़ाऐं,
मानव लड़ी बनाऐं,नेत्रदान की अलख जगाऐं,
दूर करें अंधकार का अहंकार, बृम्हांड में गुंजित हो यह टंकार,
आओ नेत्रदान की अलख जगाऐं ,दूर करें अंधकार का अहंकार,

जितेन्द्र परिहार,
10 सितम्बर 2015,10.17 अपरांह .

# 50.नेत्रदान

मानव जीवन बहूमूल्य जैसा है हरित वन.
नेत्रदान अनमोल जैसा है जीवन जल.
पुनः जन्म हो मेरा भारत धरती पर.
पहनूँ हरित वर्दी हर जन्म.
भारत माँ तुझे शतः शतः प्रणाम.

जितेन्द्र परिहार

# 51.मुझे दान नहीं ,प्राण  दो

मैं यकृत हूँ ,क्षत - विक्षत हूँ, अधर पर मदिरा , यौवन का अल्हड़ तूफान ,
वसा, रसा और विष का संताप , मैं यकृत हूँ ,क्षत - विक्षत हूँ,
मुझे दान नहीं ,प्राण  दो.

मैं हृदय हूँ,क्या क्या बयां करूँ? रुदन है,संताप है,रुधिर के स्थान पर वसा ,
सोमरस ,मधुमेह , अहं का ताप ,जीवन विलाप है ,
मैं हृदय हूँ,क्या क्या बयां करूँ? मुझे दान नहीं ,प्राण  दो .

मैं चाकर हूँ, अविरल ,सुबह से सुबह तक ,दशक से दशकों तक ,
जीवन की क्रिया - प्रतिक्रिया की प्रक्रिया हूँ. पर आज रक्त दूषित है ,
प्रदूषण का प्रकोप है ,अमृत भोजन में पारा ,विषम धातु ,
अंधाधुन रसायन का विलय न कर, बेवजह औषिधी का सेवन न कर,
मेरे दर्द को समझ , मैं गुर्दा हूँ ,मेरा दोहन न कर ,मुझे दान नहीं ,प्राण  दो.

जल, नभ - थल ,सहज़ बाल्य मुस्कान ,निश्चल जल तरंग ,पुष्प कुंज ,
इन्द्रधनुष के सप्तरंग ,काश जीवन में निशा का सतत विकट राज न होता ,
ऊषा ,प्रभात व संध्या का भी प्रत्यक्ष प्रमाण होता ,
मुझे दान नहीं,जीवन ज्योत का विधान दो.

मैं यकृत हूँ ,क्षत - विक्षत हूँ, मैं गुर्दा हूँ ,मेरा दोहन न कर,
मैं हृदय हूँ ,मेरा रूधिर अचल ,वसा न कर ,
ऊषा ,प्रभात एवं माँ के आँचल का अहसास नहीं , प्रत्यक्ष - प्रकट कर ,
मुझे दान नहीं , जीवन ज्योत का विधान दो ,
मुझे दान नहीं ,प्राण  दो ,मुझे दान नहीं ,प्राण  दो ,

'' जितेन्द्र परिहार ''
18 जून 2016 ,1135 बजे

# 52.पुत्री के प्रति समर्पित
# अहसास : पारुल तुम्ही हो

आज की शाम ज़िंदगी के फलसफे का अहसास वक़्त से पहले वक़्त की दस्तक है ,तूफा के जिन्दगी में आने के पहले ,तूफान की दस्तक है.यह शाम उदास है , यह आशियाना सुनसान है ,तुम्हारा ठुमकना ,दुलार व दिन भर का गुबार ,प्यार भर - भर लुढ़काना ,हर पल अहसास देता है ,गौधूलि पर आज दरवाजे पर दस्तक नहीं हुई , बारिश के मौसम में फुहार नहीं हुई , पर दस्तक और आने की आहट दिल पर ज़रूर है , जो कल होना है ,उसका अहसास आज हर पल हुआ है ,धीरे - धीरे चुपके चुपके दिल में जो जगह तुम्हारी है अहसास हुआ है .वोः आवाज़ सदा कानों में गूँजेगी ,कुछ लम्हे सदा साथ रहेगें ,कुछ तुम्हारे आने के बाद और कुछ जाने के बाद . थोड़ा सा दुलार ,थोड़ी सी तकरार ,कुछ रूठना ,कुछ मनाना ,
हमेशा याद रहेगा ,यह रुख़सत का वक़्त ,यह दिल के आँसू सदा साथ रहेगें ,
हे मेरे अदनान ,तुम हमेशा आबाद रहो,रोशन रहो ,भूषण रहो.

'' जितेन्द्र परिहार ''
12 मई 2015,1025 बजे

# 53.जीवन साथी के प्रति समर्पित
# मेरे हम सफ़र

मेरे हम सफ़र मैंने उसकी आँखों में अपने लिए श्रद्धा, आसक्ति एंव प्रेम की गजब सुनामी देखी है,बिना कुछ कहे , गहरी आँखों में जिन्दगी की पूरी किताब देखी है , इन आँखों में कसक, मोहब्बत का बेहिसाब बेपनाह सैलाब देखा है ,
अपने जज्बात, अपने अरमान, अपनी परेशानियों और मेरी बेवफाई को को दर किनार कर , मेरी कश्ती को पूरे होसलें से जीवन समुन्दर के भंवर और घड़ियाल से साबुत किनारे पर ठंडी बालू से सहला एक जिन्दगी देने वाले , हे मेरे हम सफर मेरी सुबह , मेरी शाम, हर पल तुम्ही से शुरू और वहीं ठहर , शायद कल में रहूँ या ना रहूँ , लेकिन हर साँस तुम्हारे अहसानों को हमेशा जिएगी.
ए मेरे चश्मे ए नूर तुम सदा गुलाब ए चमन से महकते रहो , आज तक साथ चले हैं, कल भी साथ चलेंगे, सफर लम्बा है, तुम्हारी निश्चल मधुर मुस्कान के साये में यूँ ही जिंदगी गुजारने की ख्वाहिश में सारी कायनात सिमट रुखसत हो , बस यही तमन्ना है ,
'' जितेन्द्र परिहार ''
12 मार्च 2019, रात्रि 9.35

# 54.सब कुछ जान के भी अनजान हैं ये आंखें.

सब कुछ जान के भी अनजान हैं ये आंखें.
सब कुछ दिल में समेटे ,पर हिम शिला की मूरत, मृदुल हृदय, धैर्य एवं संयम का गठजोड़ हैं ये आंखें,दृढ़ निश्चयी पर कठोर नहीं हैं ये आंखें.

पैंतीस वर्ष में कभी कुछ माँगा नहीं, कभी कुछ पूछा नहीं, माँगा कभी मनुहार नहीं, कभी शिकवा भी नहीं.कभी अर्थ, स्वर्ण माँगा नहीं,
हीरा तो क्या उनके दामन में एक दमड़ी भी कभी जड़ी नहीं.
हाँ, मेरी लाचारी पर कभी कोई कटाक्ष भी नहीं.
दो रोटी की जरूरत पर आधी रोटी निगली, पर कोई शिकवे शिकायत नहीं.
भीषण संकट में भी कोई उफ तक नहीं, सब कुछ निःशब्द, निसंकोच, चुप चाप आत्मसात किया,

धन्य हो तुम, जब कभी डगमगाये मेरे कदम, धीरे से चुपके से डगर को ही उठा कर सही राह में मोड़ दिया, पर आज तक यह अनसुना, अनजाना दर्द
तहे दिल दफ़न कर लिया.

में तो आज भी संशय में हूँ, कल को विसरने की झिझक, आज को समझने की झिझक, कल को अपनाने की झिझक.

कब सिमट जाए ये डोर, कब कट जाए यह पतंग यह तो पता नहीं,
हाँ इतना जरूर है, तुम ना होते तो आज मैं इस मुकाम पर नहीं होता, तुम ना होते तो आज जिंदगी नहीं होती, आज जिंदगी ना होती.

इस जिंदगी को उठा कब जिंदगी से रुखसत हों यह तो पता नहीं, हाँ इतना जरूर है, जो भी मिला झोली भर के बेहिसाब है, अफसोस तो इस बस बेमिसाल, बेपनाह मोहब्बत को एक पल भी ना दिया .

'' जितेन्द्र परिहार ''

# आत्म मंथन

## 55.अंतर्द्वंद का द्वंद

तुमने सिर्फ इन ओठों से झलकती छलकती मुस्कान तो देखी है ,
पर उन गमों का क्या जो सिर्फ एक राज की तरह गहरे दफन हैं ,
इन आंखों में एक चमक तो देखी हैं,
पर उन आंसुओं का दर्द कभी नहीं देखा जो छलकने के पहले ही पी लिए गए,
मेरी वफाओं की बारात तो जग जाहिर है ,
पर कुछ मेरी बेवफाईयों की दास्तां भी जग जाहिर होगी ,
जिसे उनके आंसुओं की बरसात भी
उस घनी अमावस्या की आसमानी चादर में छिपा नहीं पायी होगी.

पर उन बेवफाईयों का ग़म किसने देखा है जो खुदने खुद से की हैं ,
हर एक पल , हर एक धड़कन जिनके लिए सहा , जिया ,उनकी खामोश आंखों में भी मेरे कुछ ऐसे गुनाह नजर आते हैं जो मैंने कभी किए नहीं , इस अनकही दास्तां की तीखी चुभन कब तक सहूंगा मैं , चाहे कुछ खुर्राटों ने तुम्हारी मधुर निद्रा में खलल डाला हो ,पर उन बेबस हजारों करवटों का गुनाह क्या ,जिन्हें चादरों की कुछ सलवटों ने ही समेट लिया.

कुछ उन गलतियों के बोझ से आज भी दबा हूं मैं, जो मैंने कभी की नहीं , इस उलझन का कोई तार दूर तक नजर आता नहीं, जितना देखो बस उतनी ज्यादा बढ़ती जाती है, क्या कहूं कुछ बयां भी नहीं होता ,
इतना खुद गरज , बेबस क्यूं हूं मैं,
जो खुद से खुद को भी माफी नहीं दे पाया,

जितेन्द्र परिहार
२३ अप्रैल २०२०, प्रात: २ बजे

# 56.उलझन में गुथी अधूरी गाथा

जन्म जन्मों की गाथा को तुमने लिखने के पहले ही मिटा दिया .उन खुशियों को पंख लगने के पहले ही उड़ा दिया , सूनी आंखों के स्याह आंसू रातों में बहने के पहले ही पलकों में समा गए , तुमने कभी उन्हें छुआ नहीं , मधुर लम्हों की लड़ी को असमंजस की गुत्थियों में उलझा सदा सदा के लिए दफना दिया . कितनी बेदर्दी ? चिंदगी भर की खुशी को चुरा और नजरे चुरा कर गुजर गए. बस एक बार ठिठकते तो सही . बेवफाई और बेदर्दी की यह कैसी इन्तहा ,तन मन चुरा संत बन, राजपथ पर सरपट दौड़ मधुर यामिनी को अमिट चंद्रग्रहण बना गए.

विप्लव की इस अश्रु धारा नें हर विजय गाथा को शिखर से बस एक पल ही दूर श्याम क्षितिज में समेट विजयरथ को रोक दिया . जीवन की हर जीत को बस इक पल में ही भवंडर में मिला दिया . इस आत्म विप्लव दानावल के कुपित ग्रहण से कैसे संभव हो मुक्ति .
खुश कभी तुम होना नहीं , रोना कभी तुम होना नहीं , श्रापित क्षितिज पर पुनःजन्म , विजय का जीवन प्रण ,धैर्य और धर्म का बृहम युग्म ही होगा मुक्ति पथ दर्शक .

“ जितेंद्र परिहार ‘’
26 जनवरी 2020 रात्रि 10.15 बजे

# 57.हसरतें और ख़्वाब

आंखों में हसरतों का दरिया है,पर जमीं पर दरिया में नमी कम और उछाल गायब है ,जमाने के दिल में नमी और नज़रों से हया और शराफत का चश्मा गायब है.
आज उसूलों की जमीन पर रिश्तों के दरख जमाने के अंधड़ में आसमान में हवा हुए,बावजूद इसके एक हम हैं जो आज भी अपने उसूलों ,अपने अरमानों, अपनी चाहत को दिल के घोंसले में समेटे जिन्दगी के तूफान में हसरतों के दरख्त पर उनके आने की उम्मीद लगाए बैठें हैं.
हसरतों और ख़्वाबों के पैर नहीं होते, इन्हें पर दो,हवा दो ,
ताकि ता उम्र बुलंदी व आसमां के चाँद तारे छूं सके.

जितेंद्र परिहार,

# 58.अर्धसत्य

दो बूंदों में सिमट गई जिन्दगी की तमाम खुशियां. दो बूंदों में लिपट गई तमाम आहें और खामोशी .दो बूंदे बाहर आने को आतुर , सूनी और अकेली यादों की बारात .

इतने दौड़े कि घर बार , सब जाने अनजाने और खुद भी पीछे छूटा . शाम हुई तो अपनी परछाई के साए में आज का सच ,सिसकती खामोशी और अनबोली आंखे बयां कर गई. अपना कल जिनके लिए हर पल जिए ,आज उन्हीं गलियारों में धुंधला कल बन गए. आज की अनबोली उलझन ही सबसे बढ़ी उलझन है , जिन परायों को अपना समझ अपनाया था ,आज वही फिर से बैगाने हो गए , कल जिन अपनों को बैगाना बनाया वोह शायद आज भी गाने बैगाने हैं, अपने बैगानों के चक्कर में हम तो बेवजह औरों से क्या खुद से भी बेगाने हो बैगानो की महफ़िल में उन्हीं दो खामोश बूंदों को पलकों के कोने में दबाए बैठें हैं .

जितेन्द्र परिहार
16 अक्टूबर 2019, रात्रि 11.35 बजे.

# 59."कल आज और कल"

कल भी हसीन था, कल भी हसीन होगा ,यह तो सिर्फ आज है जिसकी खबर आज नहीं कल ही होती है, इसी कल आज और कल में कब कल हो जाएंगे इस की खबर भी तो कल ही अखबारों में छपेगी.
फिर क्यों खबर लें गुज़रे कल की,
फिर क्यों रखें दिल में कोई खौफ कल का और जमाने क्या , बस आज के इन हसीन लम्हों को हमेशा आज ही में बसने दो,

जितेन्द्र परिहार ,
6 अक्टूबर 2019, अपराह्न 2 .45.

# 60.ख्वाहिश

ख्वाहिश में सवाल  हो तो जवाब भी ख्वाहिश होगा . ख्वाब और ख्वाहिश दोनों में तुम आज भी उतने ही लाजवाब हो ,जैसे सालों साल पहले मेरी पहली - पहली ख्वाहिशों में थे .कितना अजीब पर हसीन है ख्वाहिशों का उम्र भर ख्वाहिश ही बने रहना . आखिर ख्वाहिशों की कोई तो उम्र नहीं होती , और हर उम्र में ख्वाहिशों पर कोई बंदिश भी नहीं होती .
राह में उनसे मुलाक़ात हो ,यह जरूरी तो नहीं, पर  इसी ख्वाहिश में उनसे  ख्वाहिश में ही सही मुलाकात तो हो  गई ,इतने बरसों  के बाद ही सही, पर आज मुलाकात तो  हो ही गई .
मुझे मालूम है मेरी ख्वाहिश बेवजह तो नहीं पर ख्वाहिश को वजह बना जिंदगी जीना बेवजह और गुनाह भी नहीं है.
चलो आज फिर इसी जज्बे के साथ फिर इक बार  हसीन ख्वाहिशों के हसीन पलों में सिमट जिंदगी गुजार दें, कुछ भूली , कुछ नाजुक , कुछ धड़कती, कुछ हालातों के हाथों मजबूर ,यादों में सिमटी सभी ख्वाहिशों को दोनों हाथों से  भरपूर सिमट हमेशा हमेशा के लिए जी तो लें.

जितेन्द्र परिहार
29 सितंबर 2019 , रात्रि 08.25

# 61.मैं क्या हूं?

मैं क्या हूं ,यह तो आज तक जाना नहीं , मुझे लगा मैं एक फूल पर सिमटी शबनम हूं.फूल ने उसे एक भवरां समझा ,भवरें ने उसे एक कांटा समझा और बागवान ने उसे एक तितली .
इसी उलझन में कब रात गुजर गई , कब फूल फल में तब्दील हुआ , कब शबनम  सूरज की तपिश में घुल  गई , किसी को पता ही नहीं चला.आज बाग़ और  बागवान  दोनों ही जेठ - आसाढ़  की  मृग तृष्णा में विष को  गूंथ अमृत और बसंत बयार के दो खुशनुमा पलों के हसीन  सपने समेटे यूं ही बैठे हैं.
आखिर ख्वाब तो ख्वाब ही हैं  ,जमीन पर तो कभी कभी ही नज़र होंगे .पर ख्वाब का जवाब नहीं , बस इसी जज्बे के साथ  हम भी तो तुम्हारे इंतज़ार में सालों साल किनारे पर बैठें है.

जितेन्द्र परिहार
30 सितंबर 2019 , प्रात: 08.25

# 62.जिन्दगी का सत्य

ना इधर देखा ना उधर देखा , ना इधर सोचा ना उधर सोचा ,अपनी चाहत उनकी चुप्पी , इसी जिद में ना आंव देखा बस कूद पड़े समंदर में , लहरों का बवंडर , शार्क से जद्दो जहत , लहू लहान हूं में , फिर भी जिंदा हूं अपनी जिद और जिंदगी की खातिर.बस यही एक उम्मीद ,बस यही एक तिनके के सहारे . इसी तमन्ना में इतने इम्तिहानों के बाद भी रुखसत होने से पहले , हे जिन्दगी एक हसीन पल तो अपने अरमानों ,अपनी शर्तों पर तो गुजार लूं , मुझे मालूम है जिन्दगी तुम इतनी बेवफा तो नहीं हो,

जितेन्द्र परिहार
30 सितंबर 2019 , प्रात: 08.05

# 63.धड़कन

एक धड़कन, एक जिंदगी हैं,एक धड़कन उम्मीद की एक किरण है , एक धड़कन आगे बढ़ने का जज़्बा है , एक धड़कन मुश्किल घड़ी में हौंसला है , एक धड़कन साथ साथ चलने की डगर भी है .

एक धड़कन जिंदगी को अपने बाहूपाश में समेट तूफ़ान में तिनके का सहारा है , हम तो इसी ख्याल में जमाने से क्या अपने से भी बेखबर हो , बेखोफ , बेडगर आज जिंदगी की शाम तक पहुंच गए .

आज इस जाने अनजाने सफर में जब नींद खुली तो पाया ,आज जिंदगी की धड़कन धीमे धीमे इस मोड़ पर आ दोपहर की तपिश से चौदहवीं के चांद मे तब्दील हो गई , जिसकी खबर सारे जमाने को तो थी ,सिर्फ हम ही बेखबर हो ,बेखोब उन लम्हों , उन धड़कनों को अपनी धड़कनों में गूंथ सालों साल जीते रहे. हर पल हार नहीं होती , हर पल रार नहीं होती , हर रात, रात नहीं होती जिंदगी तो कल भी बसर थी ,जिंदगी तो आज भी बसर है , जिंदगी तो कल भी बसर होगी .

जितेन्द्र परिहार ,
29 सितंबर 2019 , रात्रि 07.05

# 64.बेबयां सिमटा भुला हुआ अफसाना

कुछ लम्हे कुछ शिकायतें, कुछ अरमान, ना कुछ कहा, ना कुछ सुना, हवा का झोंका, बस दूर से निकल गया, पल भर को साथ था, पर पल भर में दूर हो गया, चश्मा लबा लब था, पर किनारे खड़े इन्तज़ार करते रहे, दो अंजुल उठे भी , फिर भी आचमन खाली रहा, कल बेसब्री से इंतज़ार था, आज बेसब्री बयां ना हूई, कल भी बेसबर, बैचेन है , इन्ही दो लम्हों में जिन्दगी सिमट सिमट कर कब बे सबर, बेखबर रूखे फुर्सत हो, बेखबर जमाना बेखबर ही सही बेवफा तो नहीं ,आज कल भी साथ था, आज कल भी साथ होगा, जिस रोज आज रुख बदल कल होजाए, उस रोज जिन्दगी बस एक बीता, बेबयां सिमटा भुला हुआ अफसाना बन तारीख ए दर्ज हो गई.

जितेंद्र परिहार,

# 65.मेरा कसूर क्या है,

मेरा कसूर क्या है,
ना कुछ मांगा, ना कुछ कहा , बस चुपचाप सब कुछ दिया , सब कुछ सहा,
देखी तुमने दिल्लगी और मुस्कान ,काश इं आंखों को दो पल गौर से तो देखा होता , इन धड़कनों की बेबसी को सुना तो होता , कितना अकेला है यह मन ,काश इस खामोशी से ढके इन घने बादलों में छिपी तड़ित को देखा होता .थक गया है यह मुसाफिर सूनी राहों पर अकेला चलते चलते .
मालूम नहीं अगला पड़ाव मंजिल है या सफर का आखिरी दौर .
चलो दम भर के दो कदम और बढ़ाएं ,शायद आखिरी मोड़ पर तुम हाथ तो थाम लो.

जितेंद्र परिहार,
3 मार्च 2020 ,रात्रि 11.43 बजे

## 66.गुजरे हुए पल अल्हड़ बचपन, युवा प्रण अलविदा,

आज फिर से ऋतु ने करवट ली है, पतझड़ थम वसंत बयार बही है मधुर कोपलें, भँवर पुष्प लिप्त हुए, काल मर्यादा,आज हिम शिखर पर जमीं बर्फ़ में दबी नन्ही, मृदुल वनस्पति ने बरसों बाद प्रभात दर्शन किए, पतझड़ में बसंत आता नहीं, ग्रीष्म ऋतु में शिशिर मिलता नहीं, जीवन में बचपन और पड़ाव नदी के दो अंग, उद्गम और मिलाप , एक जीवन के दो छोर हमेशा एक साथ फिर भी अनंत दूर, चलेंगे साथ, रहेंगे साथ फिर भी रहेंगे दूर, बचपन का अल्हड़ उल्हास, प्रोढ़ अनुभव, मर्यादा की डोर, साथी संगिनी की परिणय गांठ, तीस कोस के सफर में जुड़ता परिवार, हम चलते गए कारवां बनता गया,

बचपन तुम मेरे जीवन का मधुर एहसास हो, काश आज फिर में तुम में सिमट जाऊँ, पर यह मुमकिन नहीं, आज की सुबह आज की शाम बनेगी, आज का फूल कल फल बनेगा, आज तो बस आज है, बचपन तुम तो हमेशा साथ हो . फिर भी मृगतृष्णा से हमेशा दूर ही हो और रहोगे, जीवन तथ्य है, पहले दो पलों का चार पल बाद फिर आना नामुमकिन, अब दौड़ तो आखिर मंजिल की और है,तुम साथ साथ हो, फिर भी दूर हो, तुम पास पास हो, फिर भी सिर्फ एहसास हो, तुम परछायी से साथ हो फिर भी छू नहीं सकता,

अल्हड़ बचपन, युवा प्रण अलविदा,

जितेंद्र परिहार,
18 फरवरी 2019,प्रात :3 बजे

## 67.दस्तक

आज फिर ख्वाबों में दस्तक हुई, काश आज यह दस्तक नहीं हुई होती,
इस दस्तक से सुहाने पलों की रूहानी यादें आज की आंच में पिघलकर राख हो गईं,
बह गए आंखों में सालों साल समाए अल्हड़पन के भरपूर लम्हे ,उम्र, समय और जीवन की मजबूरियों में दब गयीं तुम्हारी निश्चल मधुर मुस्कान की कशिश ,
अपना चेहरा भी पल भर के लिए बेगाना लगने लगा,
काश आज यह दस्तक नहीं हुई होती तो मुझे भी हकीकत का एहसास नहीं होता.
हाँ यह सच है तुम्हारे सामने होने के बनिस्बत तुम्हारा एहसास ज्यादा हंसी था,
जिंदगी से ज्यादा जिंदगी से जुड़ी परछाईं हंसी थी.
आखिर ख्वाब जिंदगी से जुड़ी पथरीली राह से ज्यादा नाजुक और खुशनुमा थे , आज तुम नहीं आते तो जिंदगी और लंबी होती , तन्हा तन्हा पर यादों की लड़ी और मदहोश रखती ,काश आज ख्वाबों में दस्तक नहीं हुई होती,ख्वाबों में दस्तक नहीं हुई होती.

जितेन्द्र परिहार
29 अक्टूबर 2018, साँय : 4.10 बजे

# 68.जिन्दगी एक लम्हा , एक जिन्दगी

तुमने अपनी दास्ताँ बया कर बोझ कम कर लिया , पर तुम्हारे अहसानों, आँसुओं के जमींदोज चश्मे की खनक और खटक मेरे छुपे हमसफर, कभी ख्वाब में भी खुद को माफ़ और दामन पाक, साफ सुकून से हमेशा के लिए महरूम कर दिया.

काश उस वक़्त जुबां खामोश न होती, उसे अपनी बात कहने की हिम्मत होती, काश आज जुबां खामोश होती, जलजला बयां ना करतीं. ए मेरे पर्दानशीं , ये दास्तां आज बयां ना होती , यह राज, राज ही रहता, कदमों के तले चुभे हुए नश्तर देखे नहीं जाते, धड़कन से निकली सीसक नश्तर बन गई, काश ये दास्तां आज बयां न होती, ये दास्तां आज बयां न होती.

एक पल की ओठों तपिश , जिन्दगी भर की सजा न होती , काश ये दास्तान आज बयां न होती.

एक कोने में छुपे पल के एहसास में जिन्दगी खूब बसर हो रही थी , पर अब सब कुछ बदल गया है, इस पल में उस पल को जोड़ दरिया पर पुल बनाकर जलजला पार करना नामुमकिन है, चलना भी मुश्किल, रूकना भी मुश्किल, हाथ पकड़ना भी मुश्किल, छुड़ाना भी मुश्किल.

इस अंधे मोड़ पर खड़े हो कर आते हुए तूफान को देखना भी मुश्किल , काश ये दास्तां आज बयां न हुई होती, दास्तां आज बयां न हुई होती.

चश्मे नूर की खामोशी खामोश ही रहती , हंसी की खनक, पर्दे के पीछे की दास्तां बयां कर गई , बेःगुनाह को तमाम उमर के लिए गुनहगार बयां कर गई , काश आज ये दास्तां ख्वाबों में भी बयां न होती, बयां न होती.

जिन्दगी दो पलों में सिमट गई , यादों में लिपट गई, हे मेरे हमसफ़र , हमराज़ एक तेरे आने के बाद, एक तेरे जाने के बाद, तब लगा ही नहीं , नस्तर कितना गहरा चुभ गया, आज़ नासूर दिखा तेरे जाने के बाद . काश ये दास्तान ख्वाबों में भी बयां न होती , यह राज़ तेरी घनेरी ज़ुल्फों के साये के पीछे राज़ ही रहता , काश ये दास्तां आज बयां न होती , ख्वाबों में भी ये मुलाकात न होती, मुलाकात न होती.

मैं खुश था कि मैंने जिन्दगी भर दोनों हाथों जमाने में खुशियां लुटाईं , आज अपने गिरेबां में झाँक कर देखा, तो अपनों के ख्वाबों को चूर चूर करने का दाग दामन में लिपटा पाया.

वोह हसीं लम्हे मैं भुला न पाया, और अपनों ने भुलाने भी नहीं दिये ,
काश आज ख्वाबों में भी ये मुलाकात न होती, ये मुलाकात न होती.

इस मोड़ पर चुप चाप खड़े रहना भी मुश्किल , चलना भी मुश्किल . समंदर किनारे बैठने पर नमकीन झोंकों को सहना भी मुश्किल, समंदर में डुबकी लगा कर समंदर चखना भी मुश्किल . जलजले में कूदना भी मुश्किल, जल जले से निकलना भी मुश्किल. ये जिंदगी आग का दरिया है जिसमें कूदना भी मुश्किल, निकलना भी मुश्किल.

काश आज ख्वाबों में भी ये मुलाकात नहीं होती, ये मुलाकात नहीं होती.

जितेंद्र परिहार “केशव उर्मिल”,
16 दिसंबर 2018,11.25 रात्रि.

## 69.जिंदगी की कशिश

अपने अरमानों को दफ़न करनें की कशिश किसने देखी है, अपनें चश्मे बद्दूर से बिछड़ते हुए चेहरे की तपिश किसने देखी है,
कुछ राज ऎसे हैं जो खुद से भी राज हैं,इस राज को आज ही जाना है.
बीता कल कभी आने वाला कल नहीं होता,आज कभी दुबारा आज नहीं बनता.
बिछड़े हुए लम्हे बुलंद इमारत की जमींदोज नींव है,
उन्हे खोदने पर हसीं लम्हे ,और आज की बुलंदियां ,
दोनों भरभरा कर जमींदोज होने से बेहतर,राज का राज ही रहना है.
मुझे उस कमल की कसम, उससे बेवफाई मंजूर नहीं,
मुझे अपने जमीर की कसक मंजूर नहीं.
आज जिन्दगी का सूरज शाम की ढलान पर है, कल रात में बदल जाएगा, मुझे तो बस जिन्दगी की इस हसीन शाम का लुत्फ उठाने दो, रात होने तक राज को खुद से भी राज रहने दो.

जितेंद्र परिहार “ केशव ऊर्मिल”
21 जनवरी 2019, रात्रि 9.43 बजे

# 70.इंतजार

तुम्हारे आने का मुद्दत और शिद्दत से इंतजार है,
पलक पावड़े बिछाये आँगन में गौ धूलि का बेसब्री से इंतजार है.
दिल के दरवाजे पर दस्तक हो, धड़कने दो चार हों,बस बेसब्री से इस पल का इंतज़ार है.
बरसों का सफर सुनसान राहों पर बिना पेड़ों की छांव, बिना चश्मे के आचमन, तपती रेत में, टूटी टापरी में कैसे गुजरा, तुमने कभी सोचा नहीं, तुमने कभी खोजा नहीं.आज आ रहे हो तो अपना अल्हड़पन साथ लाना, अपनी प्यारी आँखों की नशीली चुभन साथ लाना,उस धड़कन को साथ लाना जो सिर्फ मेरे लिए धड़की थी,परंतु अपना दर्प, अपना असूर, अपनी शान ए शौकत, अपनी राजसी ठसक, बाहर आँगन की उस पगडंडी पर छोड़ देना. हाँ, एक गठरी जरूर साथ लाना, जिसमें लपेट अपना दर्द अपनी तड़प, मेरे अरमानों के बाहुपाश में गूंथ हमेशा हमेशा के लिए मेरे आँगन की इस बगिया में गाड़ देना. उन्हें जीवन भर दुलार रस की सींच मिलेगी.
मेरे बेसुध बे बयां अरमानों की तुम कोई सुधि लो, ऐसी कोई चाह नहीं, उस राह पर फिर चलूँ,ऐसी कोई चाह नहीं. संयम, संस्कार और जीवन बंधन को जोड़ ,इस मोड़ के आगे आगे भी जीवन है, फिर भी दो पल दो का विराम और विरासत में सिर्फ अपनी निश्चल मधुर मुस्कान की एक झलक दे जाना, बस दबे ओठों में सिमटी एक मधुर मुस्कान देते जाना.
बस यह पल, हर पल के वीराने में मरुस्थल की बावड़ी बन इस जिन्दगी की थकती, थमती साँसों को मजबूत सहारा दे, बस इसी ख्वाहिश में सिर्फ सिर्फ तुम्हारा इंतज़ार है.

जितेंद्र परिहार
02 जून 2019,सांय 5.25 बजे.

# 71.आहट

मैंने  भरी दोपहरी में सूरज को दूज का चाँद बनते देखा है.
सितारों की झिलमिलाहट को भवंडर में छिपते हूए देखा है.
दोस्तों की  नीर भरी महफिल को  मरुधर की मृगतृष्णा बनते देखा है .

जितेन्द्र परिहार
29 अप्रेल 2015, रात्रि 11.25 बजे

# 72.असमंजस के दो कदम, असमंजस में हैं दो कदम

असमंजस के दो कदम, असमंजस में हैं दो कदम, जिन्दगी के साठवें दशक में भी हैं असमंजस में यह दो कदम,
जिन्दगी के ढाई दशक में भी थे असमंजस में यह दो कदम,
पिता की चाह, समय समाज की बेड़ियां, अर्थ तंत्र का विषम, जटिल गण और तंत्र, व्यापार, संस्कृति और यामिनी का गहरा प्रभाव, हृदय पर भारी मस्तिष्क,
तज कर स्वयं सिद्धि, पुत्र धर्म, रीति, नीति की मर्यादा की डोरी बंधन ने बदल दी केशव नंदन की जीवन दिशा, चलता रहा इस पथ पर, अविरल, सतत, कमल हृदय से दूर,
जय, विजय, पराजय, धर्म, अधर्म को तज, जय जीनेद्र का जटिल, कटिल मुकुट शीर्ष शिखर पर धारण कर , पहुंच गए दो कदम, बीत गए छह दशक, पर आज भी हैं असमंजस में यह दो कदम,
पिता धर्म के पालन में कहीं में भी नही बन जाऊं एक और शूल, पति धर्म के अविरल निश्चल पालन में द्रुत गति से उड़ गए छह दशक, सिमट गये स्वयं में स्वयं, स्वयं गति, हृदय कंपन का मृदुल गुंजन.
जीवन संघर्ष के कोलाहल में खो गया,आज इस कृष्ण पक्ष के चक्रव्यूह में पुनः असमंजस में हैं षष्ठी धारक, अर्थ, धर्म, पितृ ऋण, पितृ नीति के गठबन्धन की डोर से चल पड़े ये दो कदम,
तज स्वयं, अहंकार, राज, , जीवन धर्म को शिरोधार्य कर चल पड़े ये दो कदम, असमंजस में हैं मंजिल,पर सामंजस्य में है गति,
चल पड़े हैं ये दो कदम.

जितेन्द्र परिहार,29 अक्टूबर 2018,प्रात: 2.10 बजे

# 73.आगे आगे बढ़े चल ,मंज़िलें और भी हैं

तकरार भी, इकरार भी,जीत भी , हार भी,मित्र भी,कुमित्र भी, पितृ स्नेह भी, पितृ विछोह भी,अमृत भी ,विष भी, सन्मान भी ,तिरस्कार भी, जीवन रूपी इंद्रधनुष की सभी छटाँओं का अनुभव समेंटे हुए आज गौधूलि पर गृहस्थान परिवर्तित कर नई दिशाओं ,नये आयाम को छूने की तम्मनाऐं समेटे दिव्य पथ पर अग्रसर .

जितेन्द्र परिहार
27 दिसंबर 2016

# 74.काल चक्र

वक्त को जाना होगा , तभी तो अगला वक्त आएगा , नई सुबह का इंतज़ार करिए , हर रोज सूरज की किरणे कुछ नई ऊर्जा ला श्रृष्टि श्रजन होगा , बहता पानी ,चलता जीवन सदियों से अविरल है इसे पहचान वक्त से सबक ले आगे बढ़ो तभी तो मानव पाषाण काल से गुजरता चांद पर पहुंचा , कलयुग के बाद भी युग होंगे ,सूर्य के आगे भी कितने मंडल हैं वहां भी मानव जाएगा ,वक्त की रफ्तार से चलो , आगे बढ़ चलते रहना ही जिन्दगी है ,नियति है , कल कल और कल से सबक लेते हुए कुछ और करने का प्रयास ही जिन्दगी है

जितेन्द्र परिहार

18 अक्टूबर 2019, प्रात: 6.14 बजे

# 75. पहला कदम

अभी तो सफर की शुरुआत है, काफ़िले और महफिल को जमाना है, उम्र का सफर तो साठ के बाद शुरू होता है ,जिन्दगी तो पैंसठ के बाद रोशन होती है ,कोई शक हो तो हरीश से पूछ लो ,अभी तो जिन्दगी का लुफ़्त उठाओ जरा, हसीन लम्हों को पास आने दो जरा , ठिठक जाओ तनिक , वन्दना का साथ हर वक्त है , कल शाम भी होगी हसीन , रात की महफिल गजब होगी , दिलों में हो बेपनाह मुहब्बत , लबों पे सजाओ नगमों और नज्मों की बारात भूषण ,
कल तो सिर्फ शुरुआत हुई , बस चलते चलो ,
जिन्दगी का सफर शानदार है ,
सूरज अभी उगा नहीं ,दोपहर अभी तपी नहीं ,शाम अभी ढली नहीं ,फिर क्यों पाले घनी अंधेरी स्याह रात का भरम ,
कायनात के उस पार भी तो जिन्दगी है, बस रूमानी हसरतों को लपटे, तुम्हारी नशीली आंखों की चमक , धड़कते दिलों की तम्मन्ना समेटे चलते जाना है ,लंबा है सफर , अभी तो बस पहला कदम रखा है , बस चलते जाना है.
जितेन्द्र परिहार ,
२८ अक्टूबर २०२०, प्रात: १ बजे

## 76.पथिक और कारवाँ

सफर पर अकेले बड़े थे कदम , सफर के साथ कारवां भी बढ़ता गया , सफर में हीरे जवाहरात भी मिले जिन्हें कारवां ने हाथों हाथ संभाला , आज जब इस मुकाम पर है जिन्दगी , बस लंबे सफर का एक पड़ाव है , इस पड़ाव पर जिन्दगी और कारवां दोनों ही ठिठक गए , जिन्दगी अपनी मंज़िल की और आहिस्ता आहिस्ता खुशनुमा चांदनी में फिर चल पड़ी पर कारवां आज भी पड़ाव पर थमा हुआ हीरे जवाहरात से लदे दूसरे पथिक के इंतज़ार में है , यह तो उसकी फितरत है.

आज महसूस हुआ जिन्दगी और सफर कितना खुशनुमा और हसीन है . कारवां तो जुड़ता ही सिर्फ बिछड़ने के लिए है. फिर उसकी फिक्र क्यों .

साथ तो आखिर खुद ,खुद्दारी और परछाई ही हैं, फिर कारवां के करवट बदलने का ग़म क्यों.

हे ,पथिक तू तो बस निर्विकार , निसंकोच ,निडर चलता चल ,सफर भी तुम हो, साथ भी तुम और मंजिल भी तुम ,अंजाम भी तुम , फिर गम क्यों करें . कल कारवां फिर जुड़ेगा ,फिर दूसरी राह चुनेगा , बस इसी अमिट सच और अहसास को समेट गोधूलि से निशा और फिर प्रभात तक पथिक चले चलो बस चले चलो.

जितेन्द्र परिहार
27 अक्टूबर 2019 , प्रात:0.25 बजे

## 77.हार - जीत

कई जीत बाकी हैं, कई हार बाकी हैं,अभी तो जिन्दगी का सार बाकी है,
यहां से चले हैं नयी मंज़िल के लिए,
यह तो एक हरुफ था,अभी तो पूरी किताब बाकी है.

जितेन्द्र परिहार

## 78.फकीर

एक फकीर ने झोली उठाई और सारी दुनिया को फकीर बना दिया

**********